

सुनीता राकेश शिशिर कुमुद रजनी रूपेश संगीता अग्रवाल मिसिज मलहोत्रा

बुर कमर ऊपर नीचे जीभ से सहलाना मसलना मदहोश मस्त चूचियाँ कमर को पैर से जकड़ना शट लगाना सुपाड़ा हथियार हॉट फच्च की आवाज नितम्ब गुलाबी सूजे ओंठ चूत की पंखुड़ियाँ [क्लिटोरी](#) लौड़ा हमारी झॉटें पोते चूतड़ों से टकराये चूत की गहराइयों तक मेरी कमर को कस कर अपने पैरों के बीच फँसा कर भींच लिया था चूत सिसकने लगी घुटने के बल बैठने चूतड़ों को दवा देती धकाधक लंड पेलना जोवन आह उड़े चूत फड़क रही थी चूत की ज्वालामुखी ने लावा छोड़ दिया संगमरमरी वदन भगनासा

1

सुनीता

मैं सुनीता हूँ। कदकाठी से अच्छी हूँ। सही जगह पर सही मॉस है। वहुतों से सुना है कि मेरे वदन में बहुत आकर्षण है। चाल ढाल में ग्रेस है। कई लोगों की निगाहें अपनी ओर उठती हुई देखती हूँ। उम्र है जब सेक्स की तरफ खुलापन आ जाता है और झुकान बढ जाता है। अच्छे घर से हूँ और अच्छे घर में ब्याही गई हूँ। पति राकेश का अच्छा कारबार है। एक जानी मानी कालोनी में दूसरे माले के अपने फ्लेट में रहती हूँ। पहनने ओढने का शौक है। मेरा विश्वास है कि हर स्त्री को सज सँभर के रहना चाहिये। मैं [सैक्स](#) से सन्तुष्ट हूँ। पति हफते में कम से कम दो बार चुदाई करते हैं। कभी मेरी तबियत होती है तो पहल करके चुदवाती हूँ।

सामने ही गली के उस पार मिस्टर और मिसिज मलहोत्रा का दुमंजला घर है। सयोन बच्चे होने के बावजूद भी मिसिज मलहोत्रा कितनी सजी धजी रहती हैं। साथ बाले फ्लेट की मिसिज अग्रवाल की उम्र भी कम नहीं है। एक बड़ा लड़का है लेकिन अब भी छरहरी और चुस्त हैं। मेरे नीचे फ्लेट में मेरी जिठानी रहती हैं। उम्र ज्यादा नहीं है पर कैसी ढीली ढाली हैं न बनाव की ओर ध्यान न कपड़ों की परवाह।

करीब एक महिने से ऊपर की खाली मंजिल में मलहोत्रा लोगों ने एक किरायेदार रख लिया है। बेटी की शादी हो गयी है और बेटा पढाई के लिये बाहर चला गया है। किरायेदार दो ही जने हैं। सामने के फ्लेट में होने से उनकी जोर से कही बातें साफ सुनायी देती हैं। पति का नाम शिशिर है। लम्बा और सुदर्शन है। सुना है एम बी ए है किसी प्राईवेट कम्पनी में बडा आफिसर। पति का नाम कुमुद है। वह भी लम्बी और सुन्दर है। बैंक में काम करती है।

इधर कुछ दिनों से मैं देख रही हूँ कि शिशिर मुझे घूरता रहता है। रात में जब भी मेरी चुदाई होती है राकेश अन्दर ही झड जाता है। मैं अपनी चड्डी से ही उसका वीर्य पोंछ लेती हूँ। सुबह जब उठती हूँ तो बिना चड्डी के ही पेटीकोट पहिना होता है। कभी कभी तो ब्रेसियर भी नहीं डाली होती है। जल्दी जल्दी ब्लाऊज डाला होता है जिस में से मेरी चूचियाँ दिखाई पड़ती हैं। सुबह राकेश को जाने की जल्दी होती है। उसी हालत में उसका नास्ता बनाती हूँ फिर तैयार होती हूँ। शिशिर जब उ सके बैडरूम से लगी झत पर आकर खड़ा होता है तो सामने ही मेरा किचिन पड़ता है। उसका इस

तरह मुझे अथनंगी हालत में देखना बहुत खराब लगता है। कई बार सोचा कि मिसिज मलहोत्रा से शिकायत करूँ। थोड़ी शर्म खाके रह जाती हूँ। उस दिन रात में पहल करके चुदायी करायी थी लेकिन राकेश बहुत ही जल्दी झड़ गया। सुबह उठी तो तबियत शान्त नहीं हुई थी बदन में शुरू था। सामने देखा तो शिशिर एक टक घूर रहा था। उस समय उसका इस तरह देखना बुरा नहीं लगा। सोचा मेरी बला से देखने दो। मैं भी ठीक उसके सामने बैग चड्ढी और ब्रेसियर के पेटीकोट ब्लाउज में बैसी ही खड़ी रही। देखती क्या हूँ कि उसने गाउन के बटन खोल कर दोनों हाथों से सामने से गाउन खोल दिया। उसने कुछ भी नहीं पहना था। सामने उसका लंड तन्ना के खड़ा था। बदन उसका बहुत सुडौल था। पेट बिल्कुल भी नहीं निकला था। लंड राकेश से काफी बड़ा और मोटा था। गर्म तो मैं थी ही आदतन मेरा हाथ मेरी चूत पर चला गया। पेटीकोट के ऊपर से सहलाने लगी। अचानक होश बापिस आ गया। बड़ी ग्लानि हुई। खीजकर अन्दर भाग गयी। मेरी साँस बड़े जोरों से चल रही थी। तबियत फिर भी न मानी। उसके लंड को फिर देखने के संमोहन को न रोक सकी। बैडरूम की खिड़की से छुपके देखा। मेरे अचानक भागजाने से उसका मुँह खुला का खुला रह गया था। नीचे से कुछ आवाज आयी और वह गाउन बंद कर नीचे चला गया।

2

सुनीता

उस घटना के बाद मैं शिशिर के सामने नहीं गयी। मन में चोर होने से किसी से कहने की हिम्मत नहीं हुई। मेरी झिझक भी खत्म हो गयी। पेटीकोट में घूमती रहती। कभी कभी तो जानबूझ कर और उ घाड़ लेती। कभी ऐसा पोज बनाती कि चूचियाँ चूतड़ या यहाँ तक कि चूत उभर के सामने आ जाये। छुपछुप करके देखती कि वह नंगा तो नहीं हो गया है। इस तरह के खेल में मुझे मजा आने लगा था। इन दिनों मैं राकेश से चुदवाती भी बहुत थी।

एक सुबह शिशिर ने छत पर खड़े खड़े ऊँची आवाज में कहाः आज रात दस बजे तमाशा होगा खिड़की खोल के रखना। बात जानबूझ के कही गयी थी। मैंने निश्चय कर लिया नहीं खोलूंगी राकेश के सामने कुछ ऐसी बैसी बात हो गयी तो। राकेश साढे दस के करीब खरटि लेने लगा। मुझ से नहीं रहा गया। मैंने शिशिर के बैडरूम के सामने की खिड़की खोल दी। ठीक सामने उसकी खिड़की खुली थी। खिड़की के सामने पलंग पड़ा हुआ था जिसका सिरहाना खिड़की की ओर था। पलंग पर नंगी कुमुद लेटी थी। वह खिड़की की तरफ नहीं देख सकती थी। उसकी चूचियाँ साफ नजर आ रहीं थी छोटी सख्त बादामी फूले हुये निपिल। उसने अपनी टाँगें चौड़ा रखीं थीं। टाँगों के बीच में पूरा नंगा लंड ताने शिशिर बैठा था निगाहें खिड़की पर जमीं हुई। मैं खिड़की खोल कर पलंग पर लेट गयी। उसकी खिड़की मेरी आँखों के सामने थी। उसने सीधा मेरी आँखों में देखा और हाथ से लंड पकड़ कर कुमुद की चूत में पेल दिया। कुमुद ने अपनी चूत उठा कर पूरा ले लिया। शिशिर सीधा मेरी आँखों में देख रहा था और कस कस करके कुमुद की चूत में पेल रहा था। चोद कुमुद को रहा था लेकिन मुझे लग ऐसा रहा था जैसे चोटें मेरे में पड़ रहीं हों। कुमुद भी हर चोट पर अपनी चूत

आगे कर देती थी। पता नहीं मेरा हाथ कब मेरी चूत पर पहुँच गया। बगल में पति लेटा था और मैं साड़ी उठाये चड्ढी एक तरफ किये अपनी चूत में उँगलियाँ अन्दर बाहर कर रही थी। जैसे शिशिर की रफ्तार बढ़ने लगी मैं इस बुरी तरह से अपने को ही चोदने में लीन हो गयी कि शिशिर के झड़ने के पहले ही मैं ख़लास हो गयी। उस रात जब मैं सोयी तो ऐसा लगा शिशिर द्वारा चोदी गयी हूँ।

3

सुनीता

कल रात की बात पर बड़ा ताज्जुब हुआ। ऐसा तो कभी नहीं हुआ था कि अपना हाथ चूत पर रखा हो। जरूरत ही नहीं पड़ी थी। लेकिन शिशिर पर नाराजी नहीं थी। उसके बाद तो तबियत होती वह सब फिर देखने को मिले। रात में खिड़की खोल खोल के देखती लेकिन उसकी खिड़की बन्द होती। शायद उसने यह सब करते देख लिया। एक सुबह फिर ऊँची आवाज में जैसे अपने से ही बात कर रहा हो बोला "पहले तमाशा दिखाओ फिर देखने को मिलेगा"। सोचा मियाँ बड़े ऊँचे उड़ रहे हैं। भूल जाओ मैं यह सब करूँगी। मैं अपने रूटीन में लग गयी। शिशिर अब इतना घूर घूर के नहीं देखता था। अच्छा लगने कि जगह कुछ सूना सा लगता था। जब अपने अन्दर डलवाती थी तो शिशिर की बात की सोच कर लाल हो जाती थी और बड़ी रोमांचित भी।

उस दिन राकेश का जन्मदिन था। सुबह से ही मन प्रसन्न था। शाम के सज सँभर के बाहर खाना खाने जाते थे और रात में राकेश तबियत से हमें चोदता था। शिशिर को झत पर देखा तो मन ने जोर मारा और उसको दिखा कर मैने खिड़की खोल दी जैसे रात का संकेत दे दिया। सोचा आज देखो हमारा मजा।

रात को देर से हम लोग लौटे। मेरी खिड़की और सामने शिशिर की खिड़की खुली हुई थी। शिशिर अपनी तरफ का लैम्प जला कर कुछ पढ़ रहा था। कुमुद शायद सो गयी थी। अन्दर आते ही राकेश ने मुझे बाँहों में ले लिया और मेरे ओंठों पर कस के अपने ओंठ रख दिये। सामने मैने देखा शिशिर उठ कर खिड़की पर खड़ा हो गया और उसने अपनी लाइट आफ कर दी। मुझे जोश आ गया। मैं राकेश को साथ लिये पलंग पर आ गिरी। राकेश ने ब्लाउज के ऊपर ही मेरी दाँये स्तन पर अपना मुँह रख दिया और बाँयें स्तन को मुट्टी में जकड़ लिया। मैने पैन्ट के ऊपर ही उसके लंड पर हाथ रखा और सहलाने लगी। उसको जैसे करैन्ट लग गया हो। उसने जल्दी से मेरे ब्लाउज के बटन और ब्रेसियर के हुक खोल डाले। मेरी भरपूर गोलाइयाँ बाहर निकल आयीं जिन पर मुझे बड़ा नाज था। इसके पहिले कि वह एक चूची को मुँह में लेता मैने कहा कि इतनी अच्छी साड़ी पहनी है इसको तो उतार दो। राकेश के ऊपर बहसीपन सबार था बोला साड़ी में इतनी खुबसूरत लग रही हो आज साड़ी में ही करूँगा। इसके साथ ही उसने मेरी साड़ी और पेटिकोट को पूरा उलट दिया। इसके पहले कि वह मेरी पैण्टी उतारता मैने उसके पैण्ट के बटन खोल डाले और एक झटके में अण्डरवियर

समेत पैण्ट उतार फेंका। उसका एकदम तना हुआ लंड स्पिंग जैसा बाहर निकल आया। कमीज फेंक कर वह मेरे ऊपर आ गया। मुँह में एक चूची ले ली और निपिल चूसने लगा। मैं पूरी तरह पिघल चुकी थी। यह जानकर कि शिशिर यह सब कुछ देख रहा है मैं बहुत ही उत्तेजित हो गयी थी। मेरी चूत बुरी तरह रिसने लग गयी थी। मैंने कस के उसका सिर अपनी चूची पर और दबा लिया और नीचे हाथ डालकर लंड पकड़ लिया।

कस के मुट्टी लंड पर फेरते हुये बोली "अब डालो भी न"

ऊपर उठ कर राकेश ने मेरी पैण्टी उतार फेंकी। मैंने टॉगें चौड़ी कर लीं। चिकनी सुडौल टॉगों के बीच अब मेरी चूत मुँह खोले इन्तजार कर रही थी। एकदम चिकनी मैं पूरी तरह साफ करके रखती हूँ

जब राकेश ने लंड का अगला सिरा चूत के मुँह पर रखा मेरी आँखों के सामने शिशिर का चेहरा आ गया कि कैसे मुँह बाये वह सब कुछ देख रहा होगा। चूत में फुरेरी हो आयी। राकेश ने मेरी दोनों गोलाइयों को दोनों हथेलिया में कस के जकड़ लिया और लंड को अन्दर पेला। मेरी चूत एकदम गीली थी। उसका पूरा का पूरा एकदम घुस गया। पहले तो अन्दर जाने में थोड़ा समय लगता था। मेरे मुँह से 'शी' निकल गयी। उसकी छाती के दोनों ओर हाथ डाल कर उसको कस के जकड़ लिया।

पूरा बाहर करके राकेश ने लंड फिर पेल दिया। मैं कह उठी 'आह'

अब की बार वह लंड चूत के बाहर दूर तक ले गया और एकदम जोर लगा के घुस गया। चूत के ऊपर उसकी जड़ धप्प से पड़ी। 'आ आ ह' कह उठी।

दो तीन बार उसने ऐसा ही किया। मेरा मजा बढ रहा था 'आ ह' ऊँची हो रही थी।

अचानक वह बोला मैं झड़ रहा हूँ और वह मेरे ऊपर ढेर हो गया। ढेर सारा गाढा पदार्थ चूत में भर दिया। कभी कभी राकेश के साथ ऐसा हो जाता था।

मुझे यह सोच कर झेंप सी हो रही थी कि शिशिर क्या सोचता होगा।

4

सुनीता

अगले दिन शनिवार को मिसिज मलहोत्रा ने एक पार्टी रखी थी। पास पड़ोस के आठ दस लोगों को बुलाया था। शिशिर से मेरा और राकेश का परिचय मिसिज मलहोत्रा ने कराया। कितनी अजीब बात थी हम लोगों को एक दूसरे के अंदर का सब कुछ मालूम था और एक दूसरे को जानते तक न थे। शिशिर की आँखों में शरारत झाँक रही थी। मैं दबंग होने के बावजूद भी झिझक रही थी। मिलते ही राकेश और शिशिर एक दूसरे को पसंद करने लगे थे। ऐसे घुल मिल के बातें कर रहे थे जैसे अरसे से एक दूसरे को जानते हों।

शिशिर और कुमुद का स्वभाव सरल था। आसानी से सबसे घुल मिल गये। थोड़ी ही देर में एक गुप

सा बन गया जिसमें राकेश में शिशिर कुमुद मिसिज अग्रवाल और मिसिज मलहोत्रा सामिल थे। मिस्टर अग्रवाल अभी आये नहीं थे। पार्टी में आना जाना उनका ऐसा ही होता था हर समय धंधे की धुन रहती थी। मिस्टर मलहोत्रा मेजमानी में सबसे मिलने में ही व्यस्त थे। गुप में खुब हँसी मजाक चल रहा था। जोक्स सुनाये जा रहे थे जिनमें सेक्स पुट था। मिसिज अग्रवाल बड़ चढ़ के भाग ले रहीं थीं। मिसिज अग्रवाल कुछ कुछ भारी वदन की गदरायी जवानी की प्रौढ औरत थीं। पीलायी लिये गोरा रंग फैले हुये चूतड़ जो चलते समय बड़े मादक तरीके से हिलते थे। और भरी हुई खरबूजे सी छातियाँ। सेक्स की बात करतीं थीं तो नथुने फड़कने लगते थे छातियाँ और फैल जातीं थीं। सब एक दूसरे को सहज तरीके से संबोधित कर रहे थे। राकेश कुमुद को भाभी कह रहा था। केवल मैं और शिशिर एक दूसरे को सीधा संबोधित नहीं कर रहे थे। शिशिर अकेले मौके की तलास में था जो नहीं मिल पा रहा था और न ही मिल पाया। पार्टी से जाते समय उसने मेरी आँखों में झॉका उसके चहरे पर निराशा थी। जाते जाते उन लोगों को राकेश ने दूसरे दिन अपने यहाँ निमंत्रित कर लिया।

जिस मौके की उसे तलाश थी दूसरे दिन उसको मिल गया। अकेले पाते ही वह मेरे से चिपट गया। उसने मेरा हाथ पकड़ लिया। घबड़ा के मैं पीछे हट गयी। मेरा चेहरा पीला पड़ गया। मेरा चेहरा देख उसने एकदम से मेरा हाथ छोड़ दिया। बोला “सारी मैंने सोचा तुम मेरा लेना चाहतीं हो”। उसके बाद उसका बर्ताव एकदम शालीन हो गया और सहजता से उस शाम से वह मुझे भाभी कह कर बुलाने लगा। दोनों घरों में बहुत निकटता हो गयी। अक्सर मिलना होने लगा। लेकिन मैं अभी तक उसे ठीक से संबोधित नहीं कर पा रही थी।

गुप भी आये दिन मिलने लगा। कभी मलहोत्रा के यहाँ कभी अग्रवाल के यहाँ कभी शिशिर के यहाँ तो कभी मेरे यहाँ। अब खुल कर सेक्स की बातें होने लगी थीं। मिसिज मलहोत्रा जितनी दुपा छुपा के कहतीं थीं मिसिज अग्रवाल उतनी ही साफ साफ जबान में जिनमें हाव भाव और चेष्टायें भी सामिल होती थीं। राकेश और शिशिर अब बेधड़क बोलने लग गये थे जिसमें करने लग गये थे। कुमुद अथ सुनी सी करती थी लेकिन मैं बड़े ध्यान से सुनती थी। मुझे बड़ा ही आनन्द आता था।

शिशिर सचमुच में मेरा और अपनी बीवी का बड़ा ख्याल रखता था। दोनों परिवार साथ जाते तो मेरे उठने बैठने चाय पानी और जरूरतों के लिये तैयार रहता। भाभी भाभी कहता और उसी तरह मानने लगा था। एक बार गुप में बैठे थे।

किसी बात पर मेरा ध्यान बटाने के लिये पुकार उठा “भाभी, भाभी”।

मेरे मुँह से अचानक निकल पड़ा “हाँ बोलिये देवर जी”

सबने तालियाँ बजाई “अब सही माने में देवर भाभी हुये”।

उसके बाद मैं उस देवर कह कर ही बुलाने लगी।

पहली बार की हाथ पकड़ने की घटना के बाद उसने फिर कोई चेष्टा नहीं की।

लेकिन अब मुझे अच्छा नहीं लग रहा था। मुझे वह अनजाना शिशिर ही भा रहा था। मैं उसका लंड देखने को तरस रही थी। उसके द्वारा कुमुद की चुदायी देखना चाहती थी। जब भी वह सेक्स की बात करता था मैं गरम हो जाती थी। आखिर मेरे से न रहा गया।

एकदिन दबी जबान से कह दिया “देवर जी तमाशा दिखाओ न”

वह चौंक गया। देर तक मेरी तरफ देखता रहा लेकिन बोला कुछ नहीं।

उस रात उसकी खिड़की के पट खुले हुये थे। गयी रात कमरे की बत्ती जली तो शिशिर पलंग के किनारे नंगा खड़ा था। मोटा लंबा लंड मुँह बाये सामने तन्नाया। सामने टॉगें चौड़ी किये हुये कुमुद पलंग के किनारे पड़ी हुयी थी। उसकी चूत का मुँह खुला हुआ था। शिशिर ने झुक कर लंड उसकी चूत में लगा के जैसे ही पेला मैं धक्क से रह गयी। उधर शिशिर पेले जा रहा था। कुमुद चूत उठा उठा करके उसके झेल रही थी और मैं छटपटा रही थी। राकेश को जगा करके मैं अपनी चूत खोल करके उसके ऊपर सवार हो गयी। उससे कस कस कर झटके लगाने को कहा। झड़ जाने के बाद भी मैं पूरी तरह शान्त नहीं हुयी थी।

उसके बाद मैं शिशिर की तरफ झुकाने दिखाने लगी। जानबूझ कर ऑचल गिरा देती और अपना ब्लाउज ठीक करने लगती। सिडकटव पोज बना देती। उसके सेक्स के जोक पर मुँह बना देती। और आये दिन ‘तमाशा’ दिखाने की माँग करती।

5

महफिल

मिसिज अग्रवाल के यहाँ गुप की महफिल जमी हुई थी। आदत के अनुसार मिस्टर अग्रवाल आ करके काम धंधे पर चले गये थे।

मिसिज मलहोत्रा का जोक चल रहा था

एक दिन अकबर बादशाह ने पूँछा :बीरबल मिसिज अग्रवाल जैसी गोरी औरत की अन्दर की चीज क्यों काली है

राकेश बोल उठा “मिसिज मलहोत्रा तुम्हें कैसे पता कि काली है”।

शिशिर ने तुरत जोड़ा “हाँ भई यह तो मिस्टर अग्रवाल या फिर राकेश को पता है”

मिसिज मलहोत्रा भी पीछे रहने वाली नहीं थीं “हाथ कंगन को आरसी क्या। मिसिज अग्रवाल दिखा दें अपनी”

मेरे को सब्र नहीं था बोली “अब जोक भी कहो न”

मिसिज मलहोत्रा ने आगे कहा अकबर बादशाह ने एक हफ्ते का समय दिया और कहा कि अगर न बताया तो देश निकाला ।

वीरबल बड़े परेशान । उन्हें जबाब ही नहीं सूझता था । उनकी पत्नि ने यह हालत देखी तो पूछा “आप इतने परेशान क्यों हैं”

ज्यादा जोर देने पर वीरबल ने बादशाह का प्रश्न दोहराया । सुन कर पत्नि हँसने लगी और बोली बस इतनी सी बात है । आप बादशाह से कहिये मेरी पत्नि इसका जबाब देगी ।

दूसरे दिन मिसिज वीरबल अकबर के दरबार में पहुँची । बादशाह के जबाब माँगने पर उन्होंने एक जोर का चॉटा अकबर के गल पर लगाया । अकबर का चेहरा गुस्से से लाल हो गया । सब लोग सन्नाटे में आ गये ।

मिसिज वीरबल बोलीं “जहाँपनाह एक चोट से ही आपका चेहरा काला पड़ गया हमारी इसको तो कितनी चोटें खानी पड़ती हैं” ।

शिशिर बोला “कितनी स्तेमाल हुई है जानने का अच्छा तरीका पता चल गया” ।

मिसिज अग्रवाल भी जोक में कहाँ पीछे रहने वाली थीं कहने लगीं “बात उस समय की है जब मिसिज मलहोत्रा जनरल स्टोर्स को सँभालती थीं । ग्राहक को खुश रखने का उन्हें काफी जोश था । एक बार एक ग्राहक आया । उसे निजी चीजें खरीदना थीं । सबसे पहले उसने अच्छी ब्रेजियर माँगी ।

मिसिज मलहोत्रा ने पूछा “क्या साइज है”

ग्राहक ने कुछ देर सोचा फिर चटखारे लेकर हाथ की एक एक उँगली चूसने लगा । अगूँठे को दिखा के बोला इस साइज की ।

मिसिज मलहोत्रा “नहीं भई कप साइज क्या है”

ग्राहक की समझ में नहीं आया ।

मिसिज मलहोत्रा ने कहा “देखो इधर” । फिर अपना आँचल गिरा के अपने उभार सामने करतीं हुई बोली “इतने बड़े हैं या इनसे छोटे”

ग्राहक “इस तरह खड़े नहीं होते”

मिसिज अग्रवाल आगे कुछ कहतीं उसके पहले ही मिसिज मलहोत्रा बोल पड़ीं “हाँ याद पड़ता है मिस्टर अग्रवाल आये थे । उन्होने सबसे बड़ी साइज की ब्रेजियर ली थी । लेकिन दूसरे दिन वापिस ले आये थे कि यह तो बहुत छोटी है” ।

लेकिन मिसिज अग्रवाल चुप रहने वाली नहीं थीं “सुनो सुनो फिर ग्राहक ने कण्डोम माँगा जिसमें अपनी मिसिज मलहोत्रा एक्सपर्ट हैं” ।

मिसिज मलहोत्रा ने फिर पूछा “क्या साइज है”

ग्राहक के मुँह पर हवाइयाँ उड़ने लगीं। मिसिज मलहोत्रा ने सुझाया “स्टोर के पीछे जाओ। वहाँ एक फैन्स है। उसमें तीन छेद हैं। उनमें बारी बारी से अपना डाल कर देखो किसमें फिट होता है”

जैसे ही ग्राहक फैन्स की तरफ गया मिसिज मलहोत्रा अन्दर के रास्ते से फैन्स के पीछे पहुँच गयी और नाप लेने के लिये साड़ी उठा कर उन्होंने अपनी रसभरी फैन्स के पीछे बारी बारी से हर छेद से सटा दी।

ग्राहक के लौटने के पहले ही वह वापिस स्टोर पहुँच गयीं और उसके लिये कण्डोम निकाल ही रहीं थीं कि ग्राहक बोला “कण्डोम छोड़िये मेरे को 15 फीट फैन्स दे दीजिये”।

इस पर खूब हंगामा मचा। मिसिज अग्रवाल ने चालू रखा ‘एक बार एक ग्राहक का मन मिसिज मलहोत्रा की खास चीज पर ही आ गया’। उसकी चाह पूरी करने के लिये वह उसे अन्दर के कमरे में ले गयीं। उसको खुश करने में या खुद खुश होने में उन्हें समय का ध्यान ही न रहा। देखा तो मिस्टर मलहोत्रा के आने का समय हो गया था। जल्दबाजी में भागीं तो पैण्टी पहिनना ही भूल गयीं। एक टैक्सी रोकी और निढाल हो कर पड़ रहीं। होश सँभला तो देखा कि बगैर पैण्टी के अन्दर का सारा नजारा रियरव्यू मिरर में दिख रहा था और टैक्सी ड्राइवर घूरे जा रहा था।

वात बनाने के लिये ड्राइवर बोला “मैडम पैमण्ट कैसे करेंगी”।

मिसिज मलहोत्रा को मस्ती अभी भी थी शरारत से अन्दर की चीज और दिखाते हुये कहा “इससे कैसा रहेगा”

ड्राइवर ने जबाव दिया “और छोटी साइज का नोट नहीं है”।

मिसिज अग्रवाल ने ट्रम्प कार्ड छोड़ दिया था। वह इसी तरह उलझतीं रहतीं थीं। कभी मेरा और कुमद का नाम ले आतीं थीं।

अब शिशिर की बारी थी। राजू राजी पति पत्नि थे। राजी की बहिन की शादी थी। काफी पहले से दौनों को वहाँ जाना पड़ा। राजी का भरा पूरा परिवार था। नजदीक के महिमान भी आ गये थे। घर में अच्छी खासी रौनक हो गयी थी। ऐसे में सब औरतों को एक तरफ और मर्दों को दूसरे कमरों में सोना पड़ता था। राजू राजी मजा नहीं ले पा रहे थे। उन्होंने एक तरीका निकाला। राजी ने कहा मैं हीरे की अँगूठी पहिन कर सोया करूँगी। अँगूठी रात के अँधेरे में चमकेगी। जब तुम्हारी तबियत हो तब गई रात आ जाया करो और बगैर आवाज किये मेरी खोल कर अपनी प्यास बुझा लिया करो। लेकिन ध्यान रहे चुपचाप करना क्योंकि अगल बगल में और औरतें सोयीं होंगी। राजू का काम बन गया। आये दिन जाता और तबियत से मजे उड़ाता। राजी उसकी बेजा हरकत पर आवाज भी नहीं उठा सकती थी। उन्होंने अपने इस प्लान का कोड रखा था ‘परॉठे खाना’। राजी या राजू एक दूसरे से शरारत करने के लिये कहते ‘रात को दो परॉठे खाये’।

एक सुबह राजू खुश था। राजी को देखा तो बोला “पहले तो तुमने बड़ी आना कानी की फिर बड़े मजे लेकर दो परॉठे खाये”

राजी बोली 'नहीं तो मेरी तो कल से अँगूठी ही नहीं मिल रही है'

सामने से इठलाती हुई मोहिनी भाभी आ कर बोलीं "बीवी जी अपनी यह अँगूठी लो कल बाथरूम में रखी छोड़ आर्या थीं"

फिर बोलीं "मेरी अँगूठी गरम थी सोचा दो पराँटे में भी सेक लूँ"

मक्कारी से राजू की तरफ देखती हुई "क्यों लाला जी पराँटे ठीक सिके थे"

शिशिर का जोक सुन कर सब की नजरें बचाकर मदभरी आँखों से मुँह विचका के मैंने अपनी आशक्ति जता दी। शिशिर से सेक्स की बातें सुनती थी तो 'तमाशे' याद आ जाते थे और मेरी चूत में खुजली होने लगती थी। और उसकी मेरी तरफ वह आत्मियता। उसे मैं अपना समझने लगी थी। मैं पके आम की तरह उसकी झोली में गिरने को तैयार थी लेकिन शिशिर था कि दूरी ही बनाये हुये था। आज तो मौका देख कर हँसी के बहाने दो बार मैं उसके ऊपर ढल चुकी थी।

इस बार मेरी हरकत का उसके ऊपर असर हुआ।

उसी दिन अकेला पाकर जोक की भाषा इस्तेमाल करता हुआ शिशिर बोला "भाभी अपनी अँगूठी पर मुझे पराँटे खिलाओ न"

मन चाही बात सुनकर मैं शोख अदा से बोली "मैंने कब मना किया है जब चाहे खालो"

शिशिर "लेकिन मैं जूठा नहीं खाता"

मैं "जूठी तो हो ही गयी हूँ देवर जी"

शिशिर "मेरा मतलब वह नहीं है भाभी। 24 घंटे तक कम से कम जुठरायी नहीं होनी चाहिये"

मैं "आज कल यह मुश्किल है। होली का समय है राकेश छोड़ते ही नहीं। अच्छा देखती हूँ"

6

होली के रंग

फाग का दिन। सेक्स भरा माहौल। पूरी मस्ती वाला दिन। सुबह से दोपहर तक रंग गुलाल से होली चहेतियों के साथ। मौका मिलते ही चहेती पर जितना हाथ साफ कर सके किया। फिर नहा धो कर घर घर जा कर गुझियाँ पपड़ियाँ। शाम को एक जगह जमावड़ा जहाँ भंग की तरंग में खुल कर ताना कसी छेड़ छाड़ खुले आम सेक्स की बातें।। रात तक पति पत्नि दोनों ही आनन्द में होते और जम कर मस्त मस्त चुदायी करते। यह है होली का मद भरा त्योहार।

कॉलोनी में औरतें अपना गुप बना लेतीं थीं और आदमी लोग अलग इकट्ठे हो जाते थे। फिर बेझिझक दोनों अलग से होली खेलते रहते थे फागें और अश्लील गाने गाते रहते थे और मनमानी हरकतें करते रहते थे। मालूम पड़ा था कि औरतें ऐसे गाने गातीं थीं और ऐसी ऐसी हरकतें करतीं

थीं कि आदमी भी दाँतों तले उँगली दबालें। औरतों की लीडर एक मिसिज वर्मा थीं बिहार की। मिस्टर वर्मा थुलथुल थे और अपनी इंजीनियरी के रौबदौब में रहते थे। मिसिज वर्मा चुस्त थीं बिहार का साँवला रंग और प्रौढ अवस्था में भी छहहरी देह। आगे को उभरे हुये जोवन और पीछे को उभरे हुये कूल्हे। सब मिला के बड़ी सैक्सी फिगर और उतनी ही सैक्सी उनकी बातें। उनको देखे बिना अंदाज भी नहीं हो सकता कि औरत में कितना सैक्स भरा हो सकता है और उसको वह कितने खुले आम प्रदर्शित कर सकती है।

औरतों और आदमियों अलग इकट्ठे होने के पहले मिसिज मलहोत्रा ने अपने पिछवाड़े आपस में होली खेलने का प्रोग्राम बनाया। उनके यहाँ एक पुरानी नाद थी जिसमें उन लोगों ने पानी भर कर रंग मिला दिया। जैसे जैसे लोग आते गये उनको रक्तग से सराबोर कर दिया गया और गुलाल से चेहरा मल दिया गया। लिहाज का पर्दा उठ गया था। आदमी लोग भाभियों को यानि कि दूसरों की वीवियों को पकड़ पकड़ कर रंग मल रहे थे। कुमुद अपने को बचाये हुये दूर खड़ी थी। उसने नयी धानी साड़ी पहिन रखी थी जो शिशिर के कहने पर नहीं बदली थी। काफी खुबसूरत लग रही थी। राकेश का मन उसके ऊपर था। वह गुलाल ले कर उसकी ओर बढ़ा। कुमुद भागी राकेश उसके पीछे भागा। दीवाल के पास राकेश ने उसे पकड़ लिया। गुलाल से बचने के लिये कुमुद मुँह यहाँ बहाँ कर रही थी। राकेश ने कस के उसको चिपका लिया यहाँ तक कि उसकी चूचियों का दबाव वह महसूस कर रहा था। रानों से रानें चिपक गयी थीं। उसने तबियत से कुमुद के गालों पर मुँह से मुँह रगड़ कर अपना गुलाल छुड़ाया। मुट्टी का गुलाल उसके दोनों उभारों पर मला और नीचे हाथ डाल कर टाँगों के बीच गुलाल का हाथ रगड़ दिया। गुलाल की लाली में उसकी शर्म की लाली छुप गयी। दूर से लोगों ने सब कुछ न देख पाया। न जाने क्यों कुमुद को राकेश पर गुस्सा नहीं आ रहा था बल्कि इस सब से उसके मन में मिठाहस भर गयी थी।

सुनीता ने बहैसियत भाभी के शिशिर को खूब गुलाल मला लेकिन सबसे घाटे में वही रही क्योंकि उसके और शिशिर के मन में जो था सब के देखते कुछ न कर पाये। मिसिज अग्रवाल वापिस जाने लगीं क्योंकि गाँव से उनकी भौजी आयीं हुयीं थीं जिनको वह घर छोड़ आयीं थीं। सब ने कहा कि भौजी को यहीं ले आओ। मिसिज मलहोत्रा मिसिज अग्रवाल को पकड़ कर ले गयीं और वह लपक कर भौजी को खींच लाये। भौजी अच्छी जबान थीं। गदराया शरीर था चहरे पर लुनाई थी। मॉन्सल थीं लेकिन मुटापा नहीं था मेहनती देह थी हाथ पैरों में बल था। सीने पर भी अच्छा मॉस था। भौजी ने अग्रवाल जी को देखा तो घूँघट खींच लिया और पीठ कर के खड़ी हो गयीं। मलहोत्रा ने अग्रवाल को उकसाया “पलट दो घूँघट अपनी सलहज के संग होली नहीं खेलोगे”। भौजी सिर हिलाती रहीं पर अग्रवाल ने उनका घूँघट उघाड़ दिया और यह कहते हुये भौजी हमसे होली नहीं खेलोगी उनके दोनों गालों पर ठेर सा गुलाल मल दिया। मलहोत्रा ने उन्हें रंग से भिगो दिया।

भौजी बोलीं “बस हो गयी होली”।

वह उस क्षेत्र की थीं जहाँ औरतें कोड़ामार होली खेलतीं हैं पानी में भिगो भिगो कर आदमियों पर रस्से मारतीं हैं। भौजी ने अग्रवाल को उठा लिया और सीधा ले जाकर नॉद में गिरातीं हुई बोलीं

“लाला जी होली का मजा तो लो” ।

सब लोगों में खुशी भर गयी ।

कुमुद दौड़ी दौड़ी आयी और भौजी के कान में राकेश की तरफ इशारा करती हुई बोली “भौजी उ नको घसीटो ” ।

भौजी और कुमुद दोनों ने दौड़ के राकेश को पकड़ पकड़ कर नॉद में गिरा दिया । उसके बाद तो सब की बारी आ गयी । आदमी लोग भी पीछे रहने वाले नहीं थे । सुनीता कुमुद मिसिज अग्रवाल मिसिज मलहोत्रा सब पानी में तर बतर हो गयीं । कपड़े उनके बदन से चिपक गये थे । उभारों पर साड़ी चिपकी थी चूतड़ों की दरार में साड़ी फँस गयी थी रानों से पेटीकोट साड़ी चिपक गये थे जिससे टॉगों की आकृति और गहरायी दिख रही थी । सब कपड़ों में भी नंगी थीं । सब ललचाई नजरों से देख रहे थे । फिर गुलाल मलने का दौर चला । सबने सब औरतों के अम्मा छुये । उनको चिपका कर उनके बदन की आग ली । जिनकी आपस में रजामंदी थी उन्होंने लंड चूत पर भी हाथ फेरे । कुमुद ने राकेश का लंड सहला दिया । सुनीता ने अपनी रानें एक दम सटा कर शिशिर के लंड पर अपनी चूत दबा दी । मिसिज अग्रवाल और मिसिज मलहोत्रा ने तो सब के लंड का लुफ्त लिया । पूरे चेहरे रंग गुलाल में सन गये । वह भुतनियों जैसी लग रहीं थीं ।

अग्रवाल और मलहोत्रा ने भौजी को पकड़ कर नॉद में धकेला तो भौजी अग्रवाल को भी अपने संग खींच ले गयीं । उनकी साड़ी उघड़ गयी थी और उन्होंने अपनी दोनों टॉगें अग्रवाल की कमर के ऊपर बाँध कर उनको पानी में जकड़ रखा था । उन्होंने न तो चडढी पहिन रखी थी न ही अँगिया । अगर अग्रवाल भी न पहने होते तो उनका का लंड भौजी की चूत में घुस गया होता । अग्रवाल जब पानी से निकले उनका लंड तना हुआ था जिससे पैण्ट में टैण्ट बन गया था । मिसिज अग्रवाल ने उसको देखा सबने देखा । वास्तव में सभी आदमियों की यही हालत हो रही थी । गीले पैण्टों से उनके लंड सर उठा रहे थे जिनको वह बड़ी मुश्किल से पैण्ट में हाथ डाल के दबा पा रहे थे ।

भौजी जब पानी से निकलीं तो उनकी चूचियाँ तन गयीं थीं गीले ब्लाउज से दो नुकीली चोंचें निकल रही थीं । साड़ी ऊपर तक चिपक गयी थी । दो पुष्ट जाधें दिख रही थीं । वह बड़ी मादक दिख रहीं थीं । दोनों हाथों में गुलाल भर के वह अग्रवाल से चिपक गयीं उनको तबियत से गुलाल मला ।

मुस्करा कर आँख नचा कर बोलीं “लाला फिर खेलियो होली” ।

अकेला मिलने पर वह अग्रवाल से बोलीं “लाला तुम को सरम नई आवत अपना खूँटा हमाई ऊके मूँ पैई लगा दओ । तुमारे सारे सें हम का कैहें तुमने तौ हमें खराब कर दओ” ।

अग्रवाल “कओ तो हम माफी लैहें पर का करैं भौजी तुम हौई ऐसी कै हमाओ बौ काबू मेंई नई रओ” ।

भौजी इतरा के “सबर रखौ ननदी से अच्छी हम थोड़े ही हैं” ।

अग्रवाल “तुमारे से उनका का मुकाबला । भौजी जब मूँ पर रख लओ तौ भीतर लै लो न” ।

भौजी आँखें दिखाते हुये “लाला तुम बहुत बदमास हो मैं ननदी से कऊँगी” ।

अग्रवाल “भौजी आप जो चाहौ करौ हम तौ दिल की बात कै दर्ई” ।

भौजी मस्ती से आँख नचाकर बोलीं “रात में जबई मौका मिलै आ जइयो तुमाई इछा पूरी कर देहें” ।

7

औरतों की होली

इस बीच औरतों का गुप जमा हो गया था । लेडीज उधर चली गयीं । कुछ औरतें बातचीत से हावभाव से हरकतों से बेकाबू हो रहीं थीं । फूहड़ से फूहड़ बातें कर रहीं थीं । वदन खोल खोल कर के दिखा रहीं थीं । इन सबमें आगे मिसिज वर्मा थी । वह एक बहुत बड़ा डिलडो लिये थीं । हरकतों से ऊपर से अपने में लगा कर दिखाती थीं । किसी औरत से चिपक जाती थीं उसको चूमने लगती थीं ऊपर से डिलडो लगाने लगती थीं ।

ढोलक पर थाप पड़ने लगी । कोई स्वाँग भर रहा था । कोई नाच रहा था । कोई गा रहा था । मिसिज वर्मा की मंडली ने सामूहिक गाना शुरू कियाः

“झड़ते हैं जिसके लिये

चूत को याद कर के

ढूँढ लाया हूँ वही लंड मैं तेरे लिये

बुर में रख लेना इसे हाथों से ये छूटे न कहीं

पड़ा रहेगा यूँही झॉटों के बाल तले

झड़ते हैं जिसके लिये रोज ही उठ उठ के ।

लंड मोटा है मेरा चूत पै फिसले न कहीं

कसके ले लेना इसे चूत उठा उठा कर के

लगाये जायेगा यही धक्के धकाधक से

झड़ते हैं जिसके लिये मूठ मल मल के” ।

मिसिज वर्मा ने शेर सुनाना चालू कियेः

दिल तो दिया है तुझे पर एक शर्त लगायी है

लेनी है वो चीज जो तूने टॉगों में छिपायी है।

और उन्होंने टॉगों के बीच में हाथ कर लिया।

फिर

वेदर्द जमाना क्या जाने क्या चीज जुदायी होती है
में चूत पकड़ कर बैठी हूँ घर घर में चुदायी होती है।

चूत को उन्होंने मुट्टी में जकड़ लिया।

फिर

मुड़ कर जरा इधर भी देख जालिम
कि तमन्ना हम भी रखते हैं
लंड तेरे पास है तो क्या
चूत तो हम भी रखते हैं।

यह कहते हुये उन्होंने साड़ी ऊपर उठा दी नीचे कुछ भी नहीं पहने थीं।

शेर कहे शायरी कहे या कहे कोई खयाल
बीवी उसकी चूत उठाये चोदे उसका यार।

यह कह कर टॉगें फैला कर उन्होंने ऐसी हरकत की जैसे चुदबा रहीं हों।

अचानक भौजी ने जोर से कहा “ऐसी गरम हो रई है तौ खोल कै सड़क पे खड़ी हो जा कोई लगा
देगो”।

मिसिज वर्मा को ऐसी उम्मीद नहीं थी उन्होंने चौंक कर भौजी को देखा

और बोलीं “लगता है तुम सड़क पर ही लगवाती होगी तेरा आदमी नामर्द होगा”।

भौजी ने जवाब दिया “मेरा आदमी तेरे जैसी चार को एक साथ करै तेराई आदमी तेरी भूख न मिटा
पायै”।

मिसिज वर्मा भौजी के पास आ गयीं बोलीं” तू कितनों का एक साथ ले सकती है। ला देखूँ क्या
छिपाया है”

यह कहते हुये उन्होंने धक्का देकर भौजी को चित गिरा दिया और आदमी की तरह उन पर पसर

गयीं ।

भौजी ने चट पलटा खा कर मिसिज वर्मा को अपने नीचे कर लिया । एक हाथ से उनके दोनों कला इयाँ जकड़ ली । मिसिज वर्मा ने छुड़ाने की बड़ी कोशिश की पर भौजी की मजबूत जकड़ से न छूट सकीं ।

मिसिज वर्मा की साड़ी पलटते हुये भौजी ने कहा “बछिया जैसी गरमा रही है ले मैं लगाती हूँ बैल का तेरे में” ।

अपने दोनों घुटने फँसाकर भौजी ने मिसिज वर्मा की टाँगें चौड़ा दी । चूत मुँह खोले सामने थी । अच्छा खासा बड़ा सा छेद था । भोसड़ी हो गयी थी । लगता था खूब स्तेमाल की गयी थी । भोसड़ी गीली हो रही थी । गुलाबी नरम गहराइयों में पानी और गाढी सी सफेदी चमक रही थी । मालूम होता था हाल में ही लंड का रस चखा था जो थोड़ा अन्दर रह गया था । पानी बाहर रिस रहा था । सब लोग घेर लगा कर मजे ले कर देख रहे थे । भौजी ने सुपर साइज का डिलडो उठा लिया ।

मिसिज वर्मा गिगया उठीं “इसे मत करो मैं नहीं ले पाऊँगी रियली मैं नहीं ले सकती इसे प्लीज” ।

भौजी बोली “लेगी कैसे नई इतना डलवाने के लिये सोर जो मचावै है” ।

उन्होंने डिलडो को चूत के छेद में घुसेड़ा तो बड़ी मुश्किल से अन्दर गया । उन्होंने घुमा कर के और भीतर करना चाहा तो मिसिज वर्मा तड़पने लगीं । वह सिर यहाँ वहाँ पटक रहीं थीं और बोले जा रहीं थीं “मत करो प्लीज” ।

भौजी ने जोर लगाके डिलडो को आधा अन्दर कर ही दिया । मिसिज वर्मा के मुँह से एक चीख निकली । अब भौजी डिलडो को आगे पीछे कर रहीं थीं साथ ही चूत की घुंडी पर अँगूठा फेरती जा रहीं थीं । धीरे धीरे मिसिज वर्मा को मजा आने लगा । वह आनन्द में भर कर ‘सी सी’ करने लगीं थीं । बोले जा रहीं थीं “घुसेड़ दो उसको और अन्दर लगाओ और कस के” ।

लेकिन डिलडो उनके अन्दर उससे ज्यादा और नहीं घुस सकता था ।

वह भौजी को अपने ऊपर खीचना चाहतीं थीं आदमी जैसा कस के प्यार पाने के लिये ।

भौजी ने कहा “लो अब कौन इनको सँभालेगा” ।

और मिसिज वर्मा की एक सहेली चूत खोल के उनके ऊपर लेट गयी ।

सेर को सबा सेर मिल गया था ।

होली की शाम को सब लोग नहा धोकर शिशिर के यहाँ इकट्ठे हुये । मलहोत्रा परिवार न आ सका उनके यहाँ महिमान आ गये थे । कुमुद ने सेब पापड़ी गुजियाँ भंग की बरफी और भंग मिली ठंडाई का इंतजाम कर रखा था । होली के माहौल का असर था ऊपर से भंग का सुस्तर सब बहक रहे थे । राकेश

ने सुझाया सब लोग अपने अपने पहले सेक्स का अनुभव सुनायें। सब एक साथ बोले हों सब लोग अपनी अपनी बीती बतायें। सबसे पहले मेजमान शिशिर से कहा गया कि वह अपना एक्सपीरियेंस बताये।

शिशिर की कहानी

होली का दिन था। मैं इण्टरमीडियेट में रहा हूँगा। मेरी भाभी मुहल्ले में होली खेल के आयीं। वह बड़ी खुश थीं कुछ गुनगुना रहीं थीं। मैं यह बता दूँ कि भाभी मेरे से छह सात साल बड़ी थीं। मेरे से बड़ा लाड़ करतीं थीं जिसमें सेक्स बिल्कुल नहीं था। जब वह ब्याह के आयीं मैं दस साल का रहा हूँगा। वह बिल्कुल भीग गयीं थीं। साड़ी वदन से चिपक गयी थी। उनके उभार और कमर की गोलाइयाँ पूरी तरह उभर आयीं थीं। मेरी भाभी में बहुत ग्रेस था। अच्छी उँचाई थी आकर्षक मुँखछवि थी और शादी के छह सात सालों में वदन बड़ी समानता से सुडौल हो गया था।

आते ही वह बाथरूम में चली गयीं। बाथरूम में दो दरवाजे थे एक उनके कमरे की तरफ खुलता था एक मेरे कमरे की ओर जो अक्सर बंद रहता था क्योंकि मैं नीचे का बाथरूम इस्तेमाल करता था। लेकिन इस समय मेरी तरफ का दरवाजा खुला हुआ था। उन्होंने भी ध्यान नहीं दिया क्योंकि होली के लिये मुझे अपने दोस्त के यहाँ जाना था और दूसरे दिन वापिस आना था लेकिन मेरा प्रोग्राम ऐन मौके पर कैन्सिल हो गया था। मैं यही होली खेल कर वापिस आ गया था और उसी बाथरूम में नहा धो लिया था। गलती से अपनी तरफ का दरवाजा खुला छूट गया था। मैं कमरे में आराम से लेटा हुआ था जहाँ से बाथरूम का नजारा साफ नजर आ रहा था।

भाभी ने सबसे पहले अपनी साड़ी उतार के फेंक दी फिर पेटीकोट के अन्दर हाथ डाल के अपनी पैण्टी खींच ली। वह रंग से तर हो रही थी जैसे उस पर ही निशाना लगा कर रंग फेंका गया हो। जैसे जैसे वह ब्लाउज के बटन खोल रहीं थीं मेरी साँसे गरम होती जा रहीं थीं। ब्लाउज उनके शरीर से फिसल कर नीचे गिर गया। वह मेरे सामने केवल ब्रेजियर और पेटीकोट में खड़ी थीं। ब्रेजियर उनके सीने से चिपक गयी थी बादामी शहतूत से निप्पिल और उनके घेरे साफ नजर आ रहे थे। पेटीकोट आगे से उनकी रानों से बुरी तरह चिपक गया था और चूतड़ों के बीच में कैक में फँस गया था। सामने झॉट के बाल नजर आ रहे थे। उत्तेजित हो कर मेरा लंड एक दम खड़ा हो गया।

उन्होंने पीछे हाथ कर के जैसे ही हुक खोल कर ब्रेजियर अलग की कि स्पिंग की तरह दो सफेद बालें सामने आ गयीं। बहुत ही मताबाले भरे हुये जोवन थे। भाभी ने अपना हाथ पेटीकोट के नाड़े की तरफ बढ़ाया तो मेरा लंड और ऊपर हो कर हिलने लगा। उन्होंने एक इटके में नाड़ा खींचा और पेटीकोट नीचे गिर गया। माई गॉड मेरे सामने भाभी पूरी नंगी खड़ी थीं। बड़े बड़े उभार बादामी फूले फूले निप्पिल चिकनी सुडौल जाधें भरे भरे उभार लिय चूतड़ों की गोलाइयाँ और जाधों के ऊपर तरासे हुये बादामी बाल। मैंने अपना लंड पकड़ लिया नहीं तो वह हिल हिल के बुरा हाल कर देता।

भाभी की जाघों पर चूतड़ों पर रंग के धब्बे लगे हुये थे। चूत के बाल भी रंग में चिपक गये थे। उन्होंने साबुन से मल के रंग को छुड़ाया। इसके बाद उन्होंने जो कुछ किया मैं उठ के खड़ा हो गया। भाभी ने साबुन का ढेर सारा झाग बनाया और अपनी टाँगें चौड़ी कर उँगली से साबुन का झाग अपनी चूत को अन्दर बाहर करने लगीं। मेरे सामने उनकी चूत का मुँह खुला हुआ था। छेद के ऊपर फाँकों के बीच की और अन्दर की साबुन मिली लाल गहरायी मेरे सामने थी। लगता था वह रात के लिये तैयारी कर रही थीं। मेरे से न रहा गया और मैं दरवाजे के सामने जा खड़ा हुआ लंड एकदम तना हुआ।

भाभी ने मुझे देखा और उनके मुँह से चीख निकली “उई माँ”

फिर एक हाथ से उन्होंने अपनी चूत ढँक ली और दूसरे से अपनी चूचियाँ छिपाते हुये बोलीं “ऐसे क्या देखते हो जाओ न”

फिर खुद ही भाग कर अपने कमरों में चलीं गयीं।

मैं बहुत गरम हो चुका था। उत्तेजना में मेरा लंड फड़फड़ा रहा था। आँखों के सामने भाभी का नंगा वदन नाच रहा था। मैं बाथरूम में घुस गया। पैण्ट उतार कर लंड को कस कस के झटके दिये जब तक कि गाढा गाढा सफेद पदार्थ काफी देर तक उगलता रहा। भाभी की पैण्टी उठा के उससे पौँछा। पता नहीं भाभी ने यह सब देखा या नहीं।

शाम को भाभी मिलीं तो शर्म से लाल हो रही थीं। आँखें नहीं मिला रही थीं।

हिम्मत करके मैंने उनसे से कहा “भाभी आप अन्दर से भी उतनी सुन्दर हैं जितनी बाहर से”

भाभी बोलीं “तुम बहुत बेशरम हो गये हो जल्दी तुम्हारी शादी करना पड़ेगी”।

उसके बाद बहुत दिनों तक वह मुझसे शर्माती रहीं। मैं भी उनसे बहुत दिनों तक सहज न हो पाया।

सुनीता सोच रही थी कि शिशिर उसमें अपनी भाभी को देखता है और इसीलिये शुरू से उसको ताकता है और भाभी भाभी कहता है। जैसी अपनी भाभी के सामने न बढा उसी तरह उसके आगे भी नहीं बढता है। सुनीता ने निश्चय कर लिया कि इसका यह बैरियर तोड़ना ही पड़ेगा।

कुमुद की कहानी

मेजमान के रूप में अगली बारी कुमुद की थी। कुमुद ने पहले सेक्स वाली बातें महफिल में नहीं सुनाई थीं। पहले तो झिझकी

लेकिन फिर कहने लगीः

‘होली मनाने मेरी दीदी मैके आर्यां थीं। उनकी शादी को एक साल से कम हुआ था। होली वाले दिन जीजाजी भी आ गये। जीजाजी बड़े खुले और मजाकिया किस्म के हैं। मेरी भाभियों ने उनसे

छेड़खानी की गंदे मजाक किये जिनका उन्होंने तुरत बढकर जबाव दिया उनके संग होली खेली जिसमें मर्यादा को ध्यान में रखते हुये उन्होंने एक दूसरे के अम्ग छुये। मेरे साथ भी जीजाजी ने होली खेली लेकिन उस समय वह मर्यादा भूल गये। रंग लगाने के बहाने उन्होंने मेरे दोनों उरोजों मसला और हाथ बढा कर चूत के ऊपर भी रगड़ दिया। यह कह कर कुमुद ने सबेरे की होली को लक्ष कर दबी आँखों से राकेश की ओर देखा।

कुमुद ने कहना चालू रखा 'मेरी दीदी ने देख करके अनजानी कर दी। भाभियाँ हँसती रहीं। मेरे ऊपर कुछ सुरूर आ गया। रंग बाजी खतम हुई तो कहा गया सब लोग नहा धोकर तैयार हो जाओ क्योंकि जीजाजी के चाचा जी ने सब को बुलाया है जो उसी शहर में रहते थे। एक भाभी ने ताना कसा कि मेरी ननद यानी दीदी के संग तो होली मनाई ही नहीं है तो वह मुस्कराके बोले अभी मनाउंगा। मैं नहाने के लिये गुसलखाने में घुस गयी। कपड़े उतार के नीचे की ओर देखा जहाँ जीजाजी ने हाथ लगाया था तो सिहरन हो आयी। मैंने वहाँ पानी की तेज धार छोड़ दी। साबुन उठाने के लिये ताक पर हाथ बढाया और ऊपर देखा जहाँ से छत साफ नजर आती थी। वहाँ जीजाजी दीदी को पकड़े हुये थे। छत की सीढियों का दरबाजा उन्होंने बन्द कर रखा था। दीदी रंग से सराबोर हो रहीं थीं। दीदी अपने को छुड़ा के भागीं। जीजाजी ने छत की मुरेड़पर दीदी को पकड़ लिया और सामने से चिपका लिया। दीदी मुरेड़ पर झुकतीं गयीं और जीजाजी उनकी चूचियों को चूमने लगे। दीदी ने उनके सिर के ऊपर हाथ रख कर और जोर से सिर चूचियों पर दबा लिया और दूसरे हाथ से जीजाजी का लंड टटोलने लगीं। जीजाजी को जैसे करैंट लग गया हो। वह दीदी से अलग हो गये और पेटीकोट समेत उनकी साड़ी उलट दी। गीले अण्डरवियर को नीचे खींच कर उतार लिया फिर उँगली में घुमाते हुये नीचे सड़क पर फेंक दिया। अपने हाथ से पैण्ट के बटन खोलने लगे इस बीच दीदी अपने ब्लाउज के बटन खोल चुकीं थीं और उन्होंने ब्रेजियर के हुक खोल कर उसको अलग कर दिया। उनके भरे जोवन मुँह बाये खड़ थे। मुझे नहीं मालूम था कि उनकी गोलाइयाँ इतनी बड़ी थीं। जीजाजी ने अपनी पैण्ट गिरा दी। उनका मोटा लंड एकदम अटैन्शन में खड़ा था। उस बीच मैं साबुन घिस घिस के बहुत सारा जीजाजी का लंड सामने आया अपने आप मेरा हाथ चूत के छेद पर चला गया और मैंने सारा का सारा झाग चूत में घुसेड़ लिया।

दीदी ने अपने आप टॉगें चौड़ा दीं। वह चूत का मुँह फैलाये मुरेड़ से टिकी झुकी हुयीं थीं पीठ मुरेड़ पर पसरी हुई थी। दीदी का सिर मुँड़े से बाहर निकला हुआ था। सड़क पर जाने बाला कोई भी ऊपर देखे तो उनकी पोजीशन को देख सकता था लेकिन इस समय उनको इसकी फिक नहीं थी। जीजाजी ने खड़े खड़े ही लंड को हाथ से पकड़ कर उनकी चूत के मुँह पर रखा और धीरे धीरे अन्दर डालना चालू किया। दीदी की चूत उसको लीलती गयी। दीदी ने कस करके दोनों बाहें जीजाजी की पीठ पर बाँध लीं। पहले तो जीजाजी धीरे आगे पीछे करते रहे फिर उन्होंने धकाधक धकाधक चालू कर दी। दीदी भी चूत उठा उठा कर के झेल रहीं थीं।

इस बीच पता नहीं कब मैं गुसलखान में रखी कपड़े डालने की रैक से टिक गयी थी और उसकी खूँटी की घुण्डी को अपनी चूत में घुसेड़ लिया था। जब जीजाजी धकाधक लगा रहे थे मैं भी खूँटी पर उसी रिदिम से आगे पीछे हो रही थी। मैं मजे में पूरी तरह डूबी थी कि दरबाजा खटखटाने से होश में आयी। बड़ी भाभी कह रहीं थी अब निकलोगी भी बाहर या नहाती ही रहोगी सब को तैयार

होना है।

मैंने जल्दी से अपनी सफाई की और बाहर निकल आयी। जीजाजी अभी भी दीदी को लगाये जा रहे थे।

उसी दिन शाम जीजाजी के चाचा जी के यहाँ मेरी शिशिर से मुलाकात हुई। वास्तव में हम लोगों को मिलाने के लिये ही यह आयोजन किया गया था।

कहानी खत्म होने पर बड़े कामुक तरीके से राकेश ने कुमुद को देखा।

राकेश की कहानी

अब बारी राकेश की थी। उसने कहाः

मेरी शादी की तैयारियाँ हो रहीं थीं। कॉलिज के मेरे दोस्त जमा हो गये थे। शादी के कामों में नाइन का काफी रोल होता है। बहुत सारे नेगों में नाइन का अहम पार्ट होता है। भाभी ने उपटन की रस्म की तो मेरे को हल्दी बेसन और चंदन से अच्छी तरह उपटन देने के लिये नाइन बैठी। कलावती उसका नाम था। कलावती दुबली पतली थी सॉवला रंग था। बड़ी बड़ी आँखों वाले उसके चेहरे में बेहद आकर्षण था। कामकाजी शरीर एकदम चुस्त और छहररा था कहीं भी बेकार का फैट नहीं। उसके लंबे वदन की कशिश किसी को भी बाँध लेती थी। वह एकदम जबान थी। उपटन लगाते हुये जब दोस्तों ने देखा तो कड़ियों का दिल उस पर आ गया। शाम को जब हम सब लोग बैठे तो रमेश ने जो मैरिड था कहा कि वह नाइन की लेना चाहता है। उसके बाद तो एक एक करके सब मैरिड और क्वॉरे दोस्तों ने अपनी मंशा जता दी कि वह कलावती को चोदना चाहते हैं। डर था कि नाइन की उनकी बात सुन कर भड़क न उठे और जंजाल खड़ा कर दे। रमेश बोला 'मैं रह नहीं सकता मैं नाइन से बात करूँगा'। मेरे को बड़ा डर लगा कि कहीं बवंडर न उठ खड़ा हो। रमेश नसिमझाया कि तुम मत घबड़ाओ मैं सीधे पूँछ लूँगा। न चाहेगी तो बात खतम।

नाइन को एक नौकरानी के जरिये यह कह कर बुलाया गया कि दूल्हे राजा बुलाते हैं। मैं और सब दोस्त अन्दर के दूसरे कमरे में बैठ गये केवल रमेश उस कमरे में रहा। कलावती आयी तो मुझे पूछने लगी। रमेश बड़ी नम्रता से बोला "कलावती दूल्हेराजा तुमसे शर्मा रहे हैं। मुझसे कहा है कि तुमसे बात करूँ। देखो कलावती मेरी बात तुम्हें अच्छी न लगे तो नाराज न होना मैं दूल्हेराजा की तरफ से तुमसे माफी माँग लूँगा लेकिन बात आगे मत बढ़ाना"

कलावती सहम गयी "आप क्या बात करते हैं बाबू जी बोलिये क्या है"

रमेश "कलावती तुम बहुत अच्छी हो तुम्हारा घरबाला बहुत ही भाग्यवान है। बात यह है कि तुमने हम लोगों का दिल जीत लिया है। हम लोग चाहते हैं कि तुम हमें सुख दे दो कि हम हमेशा तुम्हें याद करते रहें"।

कलावती कुछ समझी कुछ नहीं बोली "मैं क्या सेवा कर सकती हूँ"।

रमेश को सीधा कहना पड़ा "हम लोग तुमको भोगना चाहते हैं"

मेरा दिल धकधक कर रहा था।

कलावती के चेहरे पर लाजभरी खुशी दौड़ गयी। मस्ताके बोली “सबसे पहले दूल्हेराजा को करना होगा। अपनी दुल्हन से पहले मेरे साथ सुहागरात मनायें। उनसे सोने का गहना लेंगी फिर तुम सब लोगों की तबियत खुश कर दूँगी”।

शर्त बड़ी टेढ़ी थी। शादी शुरू हो गयी थी नेग हो रहे थे। मैं सुनीता के लिये बेकरार था कलावती से संभोग नहीं कर सकता था। उसको बहुत समझाया ज्यादा पैसे का लालच दिया लेकिन वह टस से मस न हुई। यहाँ मेरे दोस्त मेरे ऊपर दबाव डाल रहे थे वह कलावती को चोदने को उतावले थे। कहने लगे नाम के लिये डाल देना बस। उतने सारे दोस्तों का मन रखने के लिये मुझे उनकी बात मानना पड़ी।

तय हुआ कि बारात उठने के पहले जब मुझे तैयार होने के लिये एक कमरे में अकेला छोड़ दिया जायेगा कलावती चुपचाप कमरे में आ जायेगी। नाइन होने से उसका आना जाना आसान था। शादी के बाद जब मैं सुनीता रातें रंगीन कर कहा हूँगा मेरे दोस्त भी कलावती के संग आनन्द मनायेंगे।

जब कलावती कमरे में आयी मैं उसे देखता ही रह गया। लगता है उसने अपना भी उपटन कर डाला था। चेहरे पर गजब की लुनायी थी। बहुत कीमती न सही लेकिन उसने एक अच्छी साड़ी और राजस्थानी चोली पहन रखी थी जो उसके ऊपर खूब फव रही थी। आते ही उसने मेरे पैर छुये। मैंने यह कहते हुये कि ये क्या करती हो अपने से चिपका लिया। उसकी कमनीय देह बेल सी मेरे से चिपक गयी। उसका वदन मेरे वदन के उतार चड़ाव में फिट हो गया था। मेरी रानों में उसकी जाँघें समा गयीं थीं। लंड के ऊपर चूत फिट हो गयी थी। सीने पर उसके सख्त स्तनों और चूचियों की चुभन महसूस कर रहा था। वह और भी चिपकती हुई खड़ी रही। जल्दी से निपटने के लिये मैंने चूत छुने को साड़ी में हाथ डालना चाहा तो वह बोली “राजाजी इत्ते बेसब्र न हो। लो इनसे खेलो”। हाथ पीछे कर उसने चोली की डोर खींच दी। नीचे उसने कुछ भी नहीं पहन रखा था। लपक कर मैंने दोनों गोलाइयों को मुट्टी में दबा लिया। उसकी छातियाँ छोटी पर सख्त थीं।

छातियों को मसलते ही कलावती ‘आह आह’ कर उठी। मैंने सिर झुका के उसकी वारियाँ चूची मुँह में कर के धीरे से दाँतों से दबा ली। कलावती जोर जोर से ‘उईईईईई’ कर उठी। जल्दी ही वह गरम हो गयी थी। उससे अब रहा न गया लंड को पकड़ के हिलाते हुये बोली इसे निकालो न। मैंने पजामा और अण्डरवियर नाड़ा खोल कर नीचे गिरा दिया।

उसने मेरा तना हुआ लंड देखा तो मुँह से निकल गया”उई दैया इत्ता बड़ा हथियार है मेरी लिल्ली में कैसे घुसेगा”।

मैंने कहा “तो फिर अपनी लिल्ली दिखाओ न” और उसके पेटिकोट का नाड़ा खींच दिया। साड़ी समेत पेटिकोट नीचे गिर गया।

जैसे ही वह नंगी हुई भाग के बिस्तर पर लेट गयी। मैं भी पूरा नंगा हो कर उसके ऊपर जा गिरा।

कलावती ने मेरे से पूछा “राजाजी तुमने पहले किसी को चोदा है”।

मैं झूठ बोला “नहीं तो”

कलावती का चेहरा चमक उठा “ओ मइया मैं ही इसका पहला रस लूँगी। मैं ही आपकी सही औरत बनूँगी”।

फिर बोली “इसका प्रसाद चखना होगा”।

मेरे को पलटा कर वह दोनों टॉगों के बीच बैठ गयी। दोनों हाथों से लंड को छू कर हाथ माथे पर लगा लिये जैसे यह भी कोई पूजा की चीज हो। दाँई मुट्टी में लंड को बंद कर उसके मालिस के अभ्यस्थ हाथों ने मुट्टी पूरे लंड पर इस तरह आगे पीछे की मैं हवा में तैरने लगा। फिर अगले हिस्से की खाल हटा कर सुपाड़ा उसने मुँह में ले लिया और उसे चूसने लगी। मेरा लंड फड़फड़ाने लगा। फिर पूरे लंड चचोरने लगी।

मैं बेकाबू हो गया। चूतड़ उठा उठा कर लंड उसके मुँह में ही पेलने लगा।

मेरे से उसने कहा “जब झड़ो तो रूकना नहीं। ज्यादा से ज्यादा आने देना।

इसके बाद उसने जो रिदिम चालू की कि मेरे चूतड़ हवा में ही उठे रह गये और बढ बढ के धकाधक करने लगे।

कलावती भी मुँह से पसंदगी जता रही थी “उऊँ ऊँ ऊँ ऊँ”

मेरे से रोका न गया। लंड ने एक झटका दिया और जैसे ही उगलना चालू किया उसने फिर सुपाड़े को दाँतों में थाम लिया और निकलते हुये रस कोपीती गयी।

जब लंड ठंडा हो गया तो आखिरी बार चाटती हुई बोली” अपने मर्द के अलावा बस मैंने तुम्हारा प्रसाद लिया है। उनका भी बस चखा भर था। आपके दोस्त किसी का भी नहीं चखूँगी”। मैंने खींच करके उसको अपने सीने से चिपका लिया।

कलावती ने मेरे सीने की बूँद को मुँह में ले लिया और हाथ नीचे ले जा कर मेरे लंड के ऊपर ढँक लिया। सीने से चिपके चिपके ही वह धीरे धीरे मेरी निपिल चूसने लगी और बड़े सूदिंग तरीके से लंड सहलाने लगी। मेरा लंड बढता ही गया और थोड़ी ही देर में पत्थर की तरह सख्त हो गया।

‘लो अपनी सुहागरात मनालो’ कह कर पलट कर चित्त लेट गयी।

फिर बोली “मैं बताती हूँ कल अपने दुल्हन की सील कैसे तोड़ोगे”।

टॉगें चौड़ा के उनके बीच में मुझे घुटनों के बल बैठा लिया। फिर अपने मेरे दोनों कंधों पर रख लिये। उसके चूतड़ हवा में उठ गये थे। मेरे सीथे सामने चूत का मुँह खुल गया था। छेद अन्दर तक दिख रहा था।

अन्दर तक चूत गीली थी और पानी रिस कर रॉनों पर फैल रहा था।

कलावती ने अपनी मुट्टी से लंड पकड़ कर चूत के मुँह से सटा दिया और बोली “इसे धीरे धीरे घुसेड़ दो”।

मैंने जोर लगाया। उसकी चूत टाइट थी पर मेरा पूरा लंड आसानी से उसमें चला गया। चूत की ग्रिप में उसको बहुत आनन्द मिल रहा था।

कलावती कहने लगी “राजाजी हमारी इसमें तो आराम से चला गया लेकिन कल ऐसा नहीं कर पाओगे। दुल्हन की फुट्टी में घुसेगा नहीं और रिपट कर ऊपर खिसक जायेगा। और जब घुसने लगेगा तो दुल्हन अपनी फुट्टी पीछे हटातीं जायेंगीं क्योंकि उनको दर्द होगा। इस आसन में तुम दुल्हन पर पूरा काबू रख सकते हो। अगर टॉगें कस के जकड़ लोगे तो वह पीछे नहीं हट पायेंगी। रूक रूक कर के डालना लेकिन वह मना करें चीखें भी तो मत रूकना पूरा अन्दर कर ही देना”।

मैं इस बीच थिरे धीरे अन्दर बाहर कर रहा था।

कलावती कहने लगी “मेरी इसको तो कूटो न कस के कि इसकी सारी गरमी निकल जाये”।

मैने बाहर तक निकाला और झटके से पूरा अन्दर कर दिया।

कलावती के मुँह से निकला “हाय राजा क्या लौड़ा है अन्दर तक हिला दिया और लगाओ कस के”।

उसके मुँह से खुला खुला सुन कर मैं और उत्तेजित हो गया। पिस्टन की तरह धकम पेल करने लगा। बड़ी दूर तक बाहर निकालता और खड़ाक से अन्दर कर देता। उसने कस के बाँहों से मेरी पीठ को जकड़ रखा था।

हर चोट पर वह पीठ में नाखून गड़ा देती और जोर से चिल्लाती “ओ रज्जा फाड़ दो इसको छोड़ना नहीं”

उसकी जबान गंदी से गंदी होती जा रही थी “रज्जा इस की भोसड़ी बना दो आज बड़ा सताती है मुझे”

मेरे को उसकी गंदी बातें बुरी नहीं लग रहीं थीं बल्कि मैं आनंदित हो रहा था और अपनी चोटें बढ़ाता जा रहा था।

अचानक उसने कसके चूत चिपका दी “अ अ ओ ओ ओ र ज्ज जा जा मैँ तो तो इ इ झ ड ड ड ग यी यी यी यी”

और अपने दाँत मेरे सीने गड़ा दिये। मैने भी लंड अन्दर रहते हुये ही उसकी क्लीटोरिस के ऊपर लंड की जड़ को कस के रगड़ा और सारा का सारा लोड छोड़ दिया।

काफी देर तक हम लोग बैसे ही पड़े रहे। फिर वह उठी। उकड़ू हो कर के उसने अपना सिर मेरे पैरों पर रखा दिया। मैने उठ कर के एक सोने का हार उसके गले में डाल दिया।

वह बोली “ राजाजी मेरे को भूल मत जाना। मैं भी आप औरत की तरह हूँ। सुहागरात आपने मेरे साथ मनाई है”।

और वह कपड़े पहिन कर चली गयी। कहाँ तो मैं जल्दी निपटना चाहता था कहाँ एक घंटे से ऊपर उसके साथ हो गया।

कुमुद अपना क्षोभ न छुपा सकी “हाउ इनसैसिटिव। बेचारी सुनीता”

अब सुनीता की बारी थी।

सुनीता की कहानी

सुनीता ने कहाः

मेरा पहला और आखिरी सेक्स बस राकेश से ही है। लेकिन मैं अपनी कहानी तब कहूँगी जब राकेश यहाँ से चले जायें।

राकेश ने जाने से मना कर दिया। सब लोगो के जोर देने पर आखिर राकेश को वहाँ से जाना ही पड़ा।

सुनीता ने कहना शुरू कियाः

राकेश से मेरी मुलाकात की शुरुआत देखने दिखाने के सिलसिले में औपचारिक रूप से हुई थी। हम लोग एक ही शहर में रहते थे। बाद में मेरी एक सहेली के जरिये जो उनकी कॉलोनी में रहती थी हम लोगों का सम्पर्क बन गया था। हम लोग मिलते रहते थे लेकिन एक दूसरे को बाँहों में लेने या चुम्बन लेने से आगे नहीं बढ़े थे मैंने ही नहीं बढ़ने दिया था।

यह प्रसंग मेरी और राकेश की शादी का ही है। राकेश के रिस्तेदार और दोस्त इकट्ठे हो गये थे। मेरे यहाँ भी मेरी सहेलियाँ और मेहमान जमा थे। विवाह के पहले के नेग हो रहे थे। बारात आने के एक दिन पहले सहेली के जरिये मुझे राकेश का एक गुप्त नोट मिला आज रात होटल ताज के इस रूम में जरूर से हमसे मिलो। हल्दी बगैरह चढ़ने के बाद मैं घर से कैसे निकल सकती थी लेकिन जरूर मिलो की खबर सुनकर जाना तो था ही। बड़ी मुश्किल से अकेले कमरे में आराम करने का बहाना कर सहेली की सहायता से छुप छिपा कर बाहर निकल पायी। होटल पहुँची तो सिहरन होने लगी। ऐसा लग रहा था कि इस राकेश से मैं पहली बार मिलने जा रही हूँ। मिलन की कामना से शरीर गरम हो गया। कमरे में पहुँची तो शर्म से दुहरी हो रही थी। गहने और शादी के जोड़े के अलावा मैं सब तरह से दुल्हन थी।

कमरे में पहुँचते ही राकेश ने मुझे दबोच लिया और कस कर होंठों पर अपने होंठ रख दिये। मैंने भी उसे कस कर जकड़ लिया। जैसे ही ले जाकर उसने मुझे बैड पर गिरा दिया और खुद मेरे ऊपर गिर गया। ब्लाउज के ऊपर ही दायें उरोज पर उसने मुँह रख दिया और बाँहों को मुझी में दबोच लिया। मुझे न करने की इच्छा ही नहीं हुई। वह धीरे धीरे बात करता रहा और मेरे बदन और हुक खोलता रहा। उसने जो बताया मैं शर्म से गड़ गयी।

दो दिन पहले मेरे यहाँ मेंहदी की रस्म हुई थी। एक चौकी पर बैठी मैं मेंहदी लगवा रही थी घुटनों पर हथेलियाँ फैलाये तभी राकेश और उसके दोस्त वहाँ आ गये थे। उस दिन रिवाज के अनुसार मैंने लहंगा पहना था। आदत न होने के कारण लहंगे का ऊपर का हिस्सा मुड़े हुये घुटनों के ऊपर चढ़ गया था और नीचे का हिस्सा जमीन पर गिर गया था। टाँगों के बीच का नजारा साफ दिख रहा

था। मैंने पिंक सिल्क की पैण्टी पहिन रखी थी। शायद मैं आने रंगीनियों को याद कर के बहुत गरमा रही थी क्योंकि पैण्टी पर चूत के ठीक ऊपर एक बड़ा गीला धब्बा फैला हुआ था। उसके सब दोस्तों ने उसको देखा। मेंहदी लगाने वाला भी बार बार वहाँ देख रहा था। राकेश ने आँखों से इशारा किया लेकिन मैंने ध्यान ही नहीं दिया था। राकेश ने उठे लहंगे को नीचे करने की कोशिश भी की थी लेकिन सबके सामने छू भी नहीं सकता था और सब ने देख तो लिया ही था।

यह सही है कि इन दिनों दिमाग में राकेश की याद कर के मेरी चूत रिस रही थी लगवाने के लिये बेकरार थी।

मैंने राकेश से कहा “मुझे माफ कर दो मैं “

पूरा बोलने के पहिले ही राकेश कहने लगा “डार्लिंग क्या बात करती हो तुमने जानबूझ कर थोड़ी किया। चलो उसी बहाने दोस्तों को मजा मिल गया जैसे तो तुम दिखती नहीं।

मैंने कहा “धुत बेशरम”

राकेश फिर बोला “एक बात है उस दिन मेरा लंड एक दम खड़ा हो गया था और रोज खड़ा हो जाता है। उसी का इलाज करने के लिये तुम्हें बुलाया है”।

मैंने कहा ”कल शादी की रस्म तो पूरी हो जाने दो”

राकेश ने प्रश्न किया “मानलो मैं तुमको आज करना ही चाहूँ तो”

मैंने सहज भाव से कहा “मैं तुम्हारी हूँ यह शरीर तुम्हारा है जो चाहे करो। लेकिन रीति निभाने के लिये एक दिन का सर्व रखो न”।

तब राकेश ने कलावती और दोस्तों की सब बात मुझे बता दी और कहा “मैं तुमसे पहले किसी को नहीं भोगूँगा। सुहागरात तो तुम्हारे साथ ही मनेगी। बोलो क्या कहती हो”।

मैंने बाँहें और टाँगें फैला दी “लो मनाओ अपनी सुहागरात”।

राकेश आहिस्ता आहिस्ता चूमता हुआ आगे बढ़ने लगा।

मैंने उसके कान में रहा “मुझे जल्दी से जल्दी वापिस पहुँच जाना चाहिये। मैं तो तैयार ही हूँ। मेरी यह गीली ही बनी रहती है। लगा दो न इसमें”।

राकेश ने एक झटके में पेटीकोट और साड़ी खींच दी। फिर अपने कपड़े उतार फेके। मैं उसके मजबूत लंड से खेलना चाहती थी वह भी मेरी चूचियों से और चूत से खिलबाड़ करना चाहता था लेकिन समय नहीं था।

मैंने उसका लंड पकड़ करके चूत से सटाया और जैसे ही उसने जोर लगाया मैं चिल्ला उठी। मेरी तबियत हो रही थी लेकिन लंड का घुसना इतना आसान नहीं था जितना मैं समझ रही थी। जब भी वह लगाता मैं चिल्ला उठती और वह हटा लेता।

मैं कहने लगी कि बस रहने दो लंड चूत का मिलना तो हो ही गया है।

इस बार राकेश ने अपने थूक से लंड को गीला किया अपने हाथ से पकड़ कर घुमा कर सुपाड़ा थोड़ा

छेद में फँसाया और मेरी कमर पकड़ करके पूरे जोर से पेल दिया। मैं चिल्लाती रही लेकिन वह रुका नहीं जब तक पूरा लंड अन्दर तक नहीं गुस गया।

मैं रोने लग गयी थी। उसने मेरे आँसू पोंछते हुये कहा “डार्लिंग तुम को जो सजा देना हो दे लो”।

लंड के आगे पीछे होने से अब भी चूत के भीतर छुरी जैसी चल रही थी।

मैने कहा “अब और मत सताओ”।

वह बोला अच्छा और घुसे हुये लंड पर ही जोर लगा कर अपनी इच्छा शक्ति से उसने पानी छोड़ दिया। पानी निकलने के पहले उसने अपना लंड बाहर निकाल लिया।

जब मैं उठी तो बैड पर खून देख कर घबड़ा उठी। राकेश ने समझाया कोई बात नहीं होटल बाले को वह चादर के पैसे दे देगा और उसने वह चादर लपेटकर अपने पास रखली जो आज भी हमारे पास है।

जब मैं होटल से निकली तो शादी के पहिले ही लुट चुकी थी।

कुमुद की भावना अब राकेश के बारे में बदल चुकी थी। वह उसे और भी सराहने लगी थी।

सुनीता ने आगे कहाः

जहाँ तक कलावती का सवाल है कलावती ने खुद सुनीता को सब बता दिया और कभी अपना हक नहीं जताया। सुनीता उसकी सहायता करती रहती थी। तीज त्योहार पर उसको साड़ी गहने आदि भी देती रहती थी। होली दिवाली वह राकेश के साथ मनाती थी। उस समय वह राकेश से चुदवाती थी। एक होली को जब राकेश उसको चोद रहा था तो राकेश का लंड फच्च फच्च कर रहा था। राकेश ने पूछा क्या बात है तो कलावती ने बताया कि यहाँ आने के पहले उसने अपने मर्द से होली मनायी थी जो अन्दर ही झड़ गया था। राकेश ने कहा कि अगली बार से वह होली दिवाली उसके संग पहले मनाये फिर अपने मर्द के साथ।

आखिरी बारी मिसिज संगीता अग्रवाल की थी।

मिसिज संगीता अग्रवाल की कहानी

यह घटना शादी के काफी बाद की है। शादी के पहलें गाँव में पली बढी। वहाँ ऐसा कुछ खास नहीं घटा सिवाये इसके कि मेरी बगल में एक लड़का रहता था। जब मैं छत पर जाती थी तो वह अपना लंड खोल कर के खड़ा हो जाता था। शादी हो कर मैं शहर में आ गयी। संयुक्त परिवार था। सास ससुर थे दो जिठानियाँ थीं। मैं सबसे छोटी थी सबसे सुन्दर और सबसे पढी लिखी। परिवार में सब लोग मेरी सुनते थे लाड़ भी करते थे खासतौर पर बड़ी जिठानी। पति भी बात मान लेते थे क्योंकि चुदाई में मैं उनको खुश कर देती थी। मैं बहुत सैक्सी थी। सैक्स की कहानियाँ पढ कर मन बहलाती थी। मैं काफी दबंग हो गयी थी। जो चाहती कर लेती थी।

गर्मियों के दिन थे। बड़ी जिठानी के मैके में उनके छोटे भाई की शादी थी। बड़ी जिठानी मैके जाने

के लिये बहुत उत्साहित थीं। उनको लिबाने उन के भाई आ रहे थे। हमारे यहाँ का रिवाज था कि शादी व्याह के मौके पर खास रिस्तेदारों को लिबाने के लिये उनके मैके से कोई आता था। उनका वही भाई आया जिसका व्याह था। ऊँचा अच्छा खासा गबरू जवान। नाम था प्रदीप। मैके जाने के उतसाह में सीढियाँ उतरते हुये जिठानी का पैर फिसला और उनके पैर की हडडी टूट गयी। वह तो जा नहीं सकती थीं तय हुआ उनकी जगह में जाऊँगी। हम लोगों के यहाँ यह भी रिवाज है बल्कि इसको अच्छा भी माना जाता है। इससे यह भावना बनती है कि परिवार की सब बहुयें बहिनें हैं। उनका अपना घर ही मायका नहीं है बल्कि देवरानियों जिठानियों के घर भी उनके मायके हैं।

ट्रेन का लम्बा सफर था। ग्वालियर से दोपहर में ट्रेन चलती थी और दूसरे दिन दोपहर में जबलपुर पहुँचती थी। मेरे मन में शरारत सूझी क्यों न सफर का मजा लिया जाये। सबसे पहले मैने सम्बोधन ठीक किया। कहा “मैं तुमसे छोटी होउगी मुझे संगीता कह कर पुकारो और खुद मैं उसे प्रदीप जी कहने लगी। टू टियर में हम दोनों का रिजर्वेशन था लेकिन दिन में तो हम लोग नीचे की बर्थ पर ही बैठे। जगह ज्यादा थी फिर भी मैं उससे सट कर बैठी। गरमी होने का बहाना कर मैने अपना पल्लू गिरा दिया। सामने की बर्थ पर बूढ़े आदमी औरत बैठे थे जो आराम कर रहे थे जैसे भी मैने उनकी चिन्ता नहीं की। मेरे बड़े बड़े मम्में ब्लाउज को फाड़ते हुये खडे थे। मैने नीचे तक कटा भ्लाउज पहिन रखा था जिसमें से गोलाइयाँ झाँक रहीं थीं। वह दबी आँखों से मेरे गले के अन्दर झाँक रहा था। मुझे छका कर मजा आ रहा था। सामान उठाने रखने के लिये झुकने के बहाने मैं अपनी चूचियाँ उससे चिपका देती थी। पहले तो वह सिमट जाता था पर थोड़ी देर में प्रदीप की झिझक जाती रही कि मैं उसकी बहिन की देवरानी हूँ और उसकी बहिन की जगह जा रहीं हूँ। उससे मेरी रिस्तेदारी तो थी नहीं।

उसे भी मजा आने लगा और वह अपनी बाँहों से ही मेरी चूचियाँ रगड़ने लगा। सोने का बहाना कर उसने आँखें बंद कर रखी थीं। उसकी आँखें खोलने के लिये मैने कहा “ओह कितनी गरमी है” और ब्लाउज के ऊपर का बटन खोल दिया। अब मेरे फूले फूले निप्पिल भी दिखायी देने लगे थे। वह टकटकी लगा कर मेरे हिलते हुये मम्मे देख रहा था। उसके टॉगों के बीच में भी हलचल दिखायी दे रही थी। और ज्यादा टीज करने के लिये मैने कहा “प्रदीप जी मैं तो अन्दर तक भीग गयी हूँ” और उसके सामने ही साड़ी में हाथ डाल कर चडढी बाहर खींच ली। वह अचकचा गया। गोद में हाथ रख कर उसने अपने उठान को छुपा लिया। मै भी मानने वाली नहीं थी। जब उसने हाथ हटा लिये तब हाथ में पकड़ी मैगजीन को उसकी गोद में गिरा कर उठाने के बहाने उसके मोटे लंड को अच्छी तरह टटोल लिया। अब स्थिति साफ थी। उसके खड़े पोल से टैण्ट जैसा बन गया।

मैने इशारा करते हुये कहा “ये क्या है अपने को काबू में भी नहीं रख सकते ऐसी बेशरमी करते हो”।

झंपने के बजाये उसने चट से जबाव दिया “जब उसकी अपनी चीज सामने हो तो मिलने को बेकरार तो होगा ही”

मैने चोट की “उसकी चीज 16 तारीख तक दूर है”। 16 को उसकी शादी थी।

उसने कहा "उससे भी अच्छी चीज सामने है"।

मैंने कहा "मुँह धो कर रखो"।

लेकिन छूने छुलाने का उपक्रम करते रहे।

रात के करीब आठ बजे गाड़ी बीना पहुँची। प्रदीप सामान उठाते हुये बोला "यहाँ उतरना है"।

मैंने सोचा यहाँ ट्रेन बदलनी है। हम लोग नीचे उतर आये। कुली से सामान दूसरे प्लेटफार्म पर ले जाने की बजाये प्रदीप सामान स्टेशन से बाहर निकाल ले गया। एक ऑटो से हम लोग कहीं चल दिये। मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। जब ऑटो एक होटल के सामने रुका तो मेरी समझ में कुछ आया।

प्रदीप बोला "आज की रात यहीं रुकेंगे"।

उसने अचानक प्रोग्राम बदल दिया था। नहले पर दहला लगा दिया था। कहाँ तो मैं मजा चखा रही थी अब वह मजा चखा रहा था।

मैंने पूछा "यहाँ क्यों रुक गये हैं" तो मुस्कराके बोला "तुमको ज्यादा गरमी लग रही है उसको निकालना है"।

मैं तो सोच भी नहीं सकती थी कि प्रदीप ऐसा कर सकता है।

कमरा उसने मिस्टर मिसिज प्रदीप के नाम से बुक कराया। खाना कमरे में ही मँगाया। अपने लिये शराब भी। मैंने शराब के लिये मना कर दिया। मैंने कहा मैं नहा लूँ तो बोला "संगीता डार्लिंग एक राउण्ड नहाने के पहले हो जाये फिर नहाने के बाद में। आज तो रात भर जश्न मनायेंगे"। मुझे पकड़ कर मम्मे दबाते हुये बोला "तुम्हारे इन रस कलसों ने ट्रेन में बड़ा तड़पाया है इनसे तृप्ति तो कर लूँ"।

उसने मेरा ब्लाउज और अँगिया उतार फेकी। कस कस के कुच मर्दन करने लगा। मैं धीमे धीमे आवाजें करने लगी। चूचियाँ मेरी कमजोरी हैं। उन पर मुँह रखते ही मैं काबू में नहीं रहती। कोई भी मेरी इस कमजोरी को जानकर मुझे चोद सकता है। प्रदीप ने मेरे निष्पिल मुँह में लिये तो मैं उत्तेजना से 'उँ ह उँ ह' करने लगी और उसका लंड थाम लिया। उसने नाड़ा खीच कर मुझे पूरा नंगा कर दिया। और खुद ही अपने सब कपड़े उतार फेंके। उसका लंड देख कर मैं दंग रह गयी। खीरे की तरह मोटा और लम्बा तना हुआ खड़ा था अग्रवाल साहब से दुगना। कमर में हाथ डाल कर वह मुझे बैड पर ले गया। चित्त लिटा कर मेरी टोंगें खोल दीं। मैंने सोचा अब वह डालेगा। मैं लेने को उत्सुक हो गयी। लेकिन मेरी चूत की तरफ वह देखता ही रह गया।

उसके मुँह से निकला "ओ माई गॉड क्या डबलरोटी की तरह फुट्टी है और ये चूतड़ों की गोला इयाँ। मैंने तुम्हारी जैसी औरत देखी ही नहीं है

मैंने पूछा "प्रदीप जी कितनी देखी हैं इस तरह"

वह हँसने लगा "होने वाली बीवी की देखी है दो भाभियों की देखी है और ऐसी ही एक दो और देखी है"।

होली के दूसरे दिन शिशिर जब लंच से लौटा तो सुनीता भाभी का फोन पर मैसेज था जितनी जल्दी हो घर आओ। शिशिर सब शुभ हो कि कामना करते हुये सुनीता के घर जल्दी से जा पहुँचा। सुनीता भाभी ने दरवाजा खोला तो वह खुबसूरत साड़ी में सजी धँजी खड़ी थीं।

शिशिर ने पूछा कि क्या बात है भाभी तो बड़ी अदा से बोलीं 'देवरजी तुम कह रहे थे कि भाभी होली नहीं मनाओगी तो मैने सोचा चलो तुम होली मना लो। तुम्हारी शर्त पूरी करने के लिये बड़ी मुश्किल से कल अपने को तुम्हारे भइया से बचा के रक्खा है आज तो वह छोड़ेंगे नहीं इसलिये अभी मना लो'। वह एक प्लेट में से मुट्ठी में गुलाल ले कर आगे बढ़ीं।

शिशिर बोला 'भाभी इतनी मँहगी साड़ी खराब करोगी' लेकिन इसके पहले ही उन्होंने शिशिर के चेहरे पर गुलाल मल दिया। शिशिर ने उनको पकड़ लिया और अपना गुलाल लगा गाल उनके गुलाबी गाल पर रगड़ने लगा। फिर उसने उन्हें बाहों में लेकर उनके रसीले ओंठों पर चूमा और अपने ओंठ गढा दिये। फिर उन्हें प्यार से चूसने लगा। सुनीता भाभी उससे चिमट गयीं और चुम्बन का जबाव पूरे जोर से देने लगीं। कुछ देर वह ऐसे ही चिपके रहे फिर भाभी ने उसकी पीठ के ऊपर हाथ ले जा कर शिशिर का सिर पकड़ कर उसे नीचे को खींचा। शिशिर का मुँह उनके कंधों को चूमता हुआ सीने पर जा पहुँचा। वह अपने गालों का गुलाल सुनीता भाभी के उभारों के ऊपर रगड़ कर ब्लाउज पर लगाने लगा। सुनीता को कर्रेंट सा लगा। वह उत्तेजित हो उठी निपिल सख्त हो गये। शिशिर को एकदम पता लग गया। उसने दायों हाथ सुनीता की कमर में डाल के सामने से चिपका लिया और बाँये हाथ से उनके ब्लाउज के बटन खोल दिये। सुनीता ने पीछे हाथ करके ब्रेसियर की हुक खोल कर के उसको अलग कर दिया। उसके सुडौल गदराये उरोज सामने थे जिनके ऊपर गहरे पिंक फूले हुये निपिल तने खड़े हुये थे। शिशिर उनको देखता ही रह गया। सुनीता भाभी ने टोका 'क्या देख रहे हो'। शिशिर सच बोला 'भाभी इतनी खुबसूरत गोलाइयाँ नहीं देखी'। सुनीता ने चोट की 'कितनों की देखी हैं'।

शिशिर का खड़ा हुआ लंड सुनीता की चूत को चुभ रहा था। उसने हाथ बढा कर उसको पकड़ लिया। प्रतिक्रिया के रूप में शिशिर ने सुनीता भाभी की दाँयी चूची मुँह में ले ली। सुनीता के मुँह से सीत्कार निकल गयी। उन्होंने सारा भार शिशिर के ऊपर डाल दिया। उन्हें बाहों में सँभाल न लिया होता तो गिर जातीं। सहारे से बैडरूम में ले जाकर शिशिर ने पलंग पर लिटा दिया। उन्होंने गले में बाहे डाल कर अपने ऊपर खींचा।

शिशिरने कहा 'पहले अपने नीचे का खजाना तो दिखाओ'।

शोख अदा से बोलीं 'पहले खजाने की चाभी देखेंगे'

इसके साथ ही उन्होंने मेरे पैण्ट के बटन और जिपर खोल डाले और अण्डरवियर समेत पैण्ट पेरों के नीचे गिरा दिया। कमीज उतार कर वह एकदम नंगा हो गया। उसका लंड फनफनाकर कर खड़ा था।

'उई ई ई ई मांााा इतना बडाााा और मोटााााा है कैसे समायगा' उल्लेजना में सुनीता भाभी की जवान लड़खड़ा रही थी।

शिशिर ने साड़ी की ओर हाथ बढ़ाया और एक झटके में साड़ी खींच दी और सिल्किन पेटीकोट का नाड़ा खोल लिया। उन्होंने कुछ कहे बगैर अपने चूतड़ उठा दिये और आसानी से खिंच कर के पेटीकोट नीचे गिर गया। उन्होंने कीमती पैण्टी पहिन रखी थी। एक बड़ा सा धब्बा चूत के पानी से फैल गया था। शिशिर पैण्टी उतारने लगा तो बोली 'इसे पहने रहने दो' लेकिन उतारवाने में उज्र नहीं किया। क्या नजारा था। संगमरमरी वदन सामने था। भाभी की पतली कमर मॉसल चूतड़ फूली हुई चूत बड़ी गोल गोल ऊँचाइयाँ और मदहोश मुश्कान आमंत्रित कर रहीं थीं। शिशिर मतबाला सा सुनीता भाभी की ओर बढ़ा और उन्होंने हाथ फैला कर उसको समेट लिया।

'उसने उनकी दाँये निपिल को मुँह में ले लिया और बाँयी चूची को हाथ से मसलने लगा। भाभी 'सी सी' कर उठीं। उन्होंने मुट्टी में लंड थाम लिया और चूत के ऊपर फेरने लगीं। शिशिर ने पोजीशन बदल दी और बाई निपिल को मुँह में लिया तो भाभी ने एक लम्बी आवाज कीः

'आाााााहहहहह'

कानों में फुसफुसयीं 'देवर जी अब क्यों तड़पा रहे हो'

साथ ही दोनों हाथों से उसका सिर पकड़ कर नीचे को खींचने लगीं। शिशिर नीचे खिसकता गया। भाभी ने लंड की उत्सुकता में अपनी टाँगें चौड़ी कर ली। लेकिन शिशिर खिसकता ही गया। वह जाघों तक खिसक आया। भाभी की टाँगें दोनों कंधो पर आ गयीं। उसने भाभी की चूत पर मुँह रख दिया। सुनीता भाभी अचकचा उठीं 'देवर जी ये क्या करते हो' और उन्होंने अपनी हथेली चूत के ऊपर रख ली। उनके लिये यह नयी बात थी। शिशिर ने एक हाथ से बल के साथ उनका पकड़ा और हटा दिया। दूसरे हाथ से उनकी चूत की फॉकें खोली और अपना मुँह गड़ा दिया। भाभी ऐतराज में अपनी दोनों टाँगें उसकी पीठ पर मारने लगीं और हाथ से शिशिर का सिर उठाने लगीं। लेकिन शिशिर का मुँह उनकी चूत से चिपक गया था सो हटा ही नहीं। वह चटकारे लेकर उनकी चूत के रस को पी रहा था। जैसे ही उसने अपनी जीभ भाभी की क्लिटोरी के ऊपर रक्खी उनका पैर मारना एकदम रूक गया। आवाज करने लगीं

'मम्मम्मपफफफ ओ माईईईईई '

उठाने की जगह उन्होंने उसके सिर को कस के चूत में दबा लिया। शिशिर ने भाभी की क्लिटोरी को दोनों ओठों के बीच ले लिया। सुनीता 'ओहहह मैं अब और नहीं रूक सकती' मुझे कसके दबा लो लो ओ ओ मै तो गई ' सुनीता भाभी ने चूत उठा कर के जोर से उसके ओठों से चिपका दी और काफी देर तर उनकी चूत में कॅपकॅपी बनी रही।

शिशिर भाभी की बगल में एक करबट लेट गया और हाथ बढ़ा के उनको खींच लिया। भाभी उससे चिपक गयीं और सीने में सिर छुपा लिया। शिशिर ने उनके सिर पर हाथ रख कर और कसके चिपका लिया। थोड़ी देर वह इसी तरह पड़े रहे एक दूसरे में मग्न। भाभी फुसफुसायीं 'देवर जी तुम्हारे

प्यार करने का तरीका भी निराला है'

'हाँ इसमें टॉगें पीठ पर खानी पड़ती हैं'

भाभी ने सिर उसकी छाती पर रगड़ा 'चलो हटो कहीं ऐसा भी कोई करता है'

'आपको मजा आया'

भाभी ने हॉमी में सिर हिला दिया। बोलीं 'देवर जी ये बताओ कुमुद इतनी अच्छी लम्बी सुन्दर है फिर तुम मेरे पीछे क्यों पड़े रहते थे।

शिशिर तुरन्त बोला 'भाभी आपने अपने को पूरे आईने में देखा है आप मैं नारोक पाने वाली अपील है। मैं काबू में ही न रह पाता था। फिर कुमुद सेक्स मैं चुलबुली नहीं है।

वह फिर बोला 'भाभी आपकी कशिश में कितने खिचे रहते होंगे'

सुनीता भाभी बोलीं 'जानती हूँ लेकिन राकेश को पूर्ण समर्पित हूँ तुम्हारे अलावा'

शिशिर ने आनन्द से उन्हें भींच लिया। आहिस्ता से एक निपिल मुँह में लेना चाही तो उन्होंने मना कर दिया 'अब नई'

वह शान्त हो गयीं थीं।

शिशिर बोला 'बस भाभी सीने पर मूह रख के लेट ने दो'

वह चित्त हो गयीं और बड़े प्यार से उसका गाल अपने बाँये उभार पर दबा लिया।

शिशिर गाल और दबाता गया फिर धीरे धीरे रगड़ने लगा। धोड़ी देर बाद उसने बगैर दबाव के अपनी दाँई हथेली उनके बाँये सीने पर रख दी। भाभी ने मना नहीं किया। उन्हें अच्छा लग रहा था। वह अब अपनी तरफ से उसके सिर पर दबाव बढ़ाती जा रही थीं। शिशिर ने आहिस्ता से अपने ओंठ खोल कर दाँयें निपिल को अन्दर कर लिया। भाभी ने झुक कर उसके माथे को चूम लिया। सुनीता भाभी अब गर्मनि लगीं थीं। मैंने ओंठों में निपिल कसके दबोच ली और चूसने लगा।

वह कराहीं 'उईईईईईईई मॉााााा तुम तो काटते हो'

लेकिन सिर को कस के चूची पर दबा लिया। अब मैं दाँयी चूची को मजे से चूस रहा था और बाँयीं को कसके मसल रहा था। वह अब चूतड़ हिलाने लगीं थीं। शिशिर ने दाँया हाथ चूची से हटा कर उनकी चूत पर रख दिया। उन्होंने दोनो जाघों से कस के दबा लिया। उसका सिर दूसरी चूची की तरफ करतीं हुयीं बोलीं 'इस को चूसो न'

शिशिर ने दूसरी चूची मुँह में ले ली और दो उँगलियों से चूत की दराज खोलते हुये तीसरी उँगली छेद में डाल दी। चूत गीली हो रही थी।

भाभी ने चट से अपनी जाघें खोल दी बोलीं 'पूरी अन्दर डाल दो'

अपने दाँयें हाथ से उसका फर्हाया हुआ लंड मुट्टी बन्द कर लिया 'ओ माई गाड ये तो मेरे हाथ में भी नहीं आ रहा है'

शिशिर उँगली अन्दर बाहर करने लगा। उनकी बुरी तरह रिसने लगी थी। बाहर पानी निकल रहा था।

'हाय अन्दर तक घुसेड़ दो ने जल्दी जल्दी से' वह पूरी तरह उत्तेजित थीं।

वह कसकस के उसके लंड पर मुट्टी चलाने लगीं थीं।

शिशिर बोला 'भाभी इसकी जगह कोई और भी होती है।

'तो डालो न उस जगह'

शिशिर के कुछ कहने के पहले उन्होंने पलट के अपनी चूत उसके लंड के ऊपर कर ली और हाथ से लंड पकड़ कर सुपाड़ा चूत में घुसेड़ लिया।

अब शिशिर के पास और कोई चारा नहीं था। उसने सुनीता भाभी को पलटा। उनकी टॉगों के बीच में घुटनों को बल बैठ गया। उन्होंने उतावली में टॉगें पूरी चौड़ा दी और चूत ऊपर उठा दी। चूत की पंखुड़ियाँ अलग अलग थीं गुलाबी छेद खुला हुआ था अन्दर पानी चमक रहा था। शिशिर ने लंड का सुपाड़ा चूत के मुँह पर रखा और धीरे धीरे घुसाने लगा।

सुनीता भाभी की सहमी सी आवाज निकली 'देवर जी आहिस्ता से डालियेगा बहुत बड़ा और मोटा है'

लेकिन उनकी चूत लंड के पुरा का पूरा लील गयी। भाभी के मुँह से निकला 'हा य'

उसने बाहर किया और घच्च से अन्दर। वह और जोर से 'हा य' कर उठीं।

उसने फिर बाहर किया फिर और जोर से घच्च। उनकी सीत्कार और ऊँची हो गयी।

शिशिर का सीधा खड़ा लंड सुनीता भाभी की चूत में सड़ाक से पूरा घुस जाता था।

जैसे जैसे घच्च घच्च की स्पीड बढ़ती गयी भाभी की 'हाययययय उईईईईई मााााााा मररररररी' की सीत्कार भी।

अकुछ देर तक झटके लगाने के बाद शिशिर पलंग के नीचे खड़ा हो गया। सुनीता भाभी को दोनों टॉगों से खींच कर पलंग के किनारे कर लिया। उनकी टॉगें चौड़ा कर उनके बीच में खड़ा हो गया। अब खड़े खड़े उसका लंड भाभी की चूत के सामने था। उसने लंड चूत के मुँह पर लगाया और कहा 'अपनी दोनों टॉगें मेरी कमर पर बाँध लो। भाभी की दोनों चूचियों को दोनों हाथों से मसलते हुये शिशिर ने एक चोट में सड़ाक से लंड अन्दर कर दिया तो भाभी हिल गयीं मुँह से चीख निकल गयी।

शिशिर ने चूत के सामने काफी बाहर तक लंड निकाल कर एकदम चोट मारी। भाभी और जोर से चीखीं 'ओ माँम मर जाऊँगी'

उन्होंने कस के शिशिर के कंधे दोनों हाथों से जकड़ लिये और अपना मुँह उसकी छाती में गड़ा लिया।

शिशिर ने जब चोट मारी तो वह बुदबुदायीं 'शिशिर ये तुम्हारी है जैसे चाहे लो इसको'

पहली बार उन्होंने उसे शिशिर कह के बुलाया था।

शिशिर धकाधक चोद रहा था। उसका लंड चूत की गहराइयों तक जा रहा था। हर चोट में लंड की जड़ चूत के ऊपर धप्प से पड़ती थी।

भाभी आपे में नहीं थीं 'आाह आाह ऊँऊँहहहहह हााााय ऊईईईईई ओ शिशिर ऐ तुम्हारी है फाड़ डालो इसको उफफफफ ओ शिशिर'

हर झटके में उसी वेग से सुनीता भाभी बढ बढ के लंड को झेल रहीं थीं। जोरों से चूत से फच्च फच्च की आवाज निकल रही थी।

अचानक भाभी ने उसकी कमर में टोंगे एकदम जकड़ लीं 'ओ मैं और नही ले सकती मैं तो गईई ईईईई मेरे शिशिररररर'

भाभी ने अपना जबालामुखी उगल दिया। उनकी चूत इतनी जोर की काँपी कि शिशिर भी न ठहर पाया 'भा भी ईईईईई मैं भी आयााााा ये लोओओओ'

उसने गहराई तक ले जाके पानी छोड़ दिया और देर तक छोड़ता रहा। जब उसने अपना लंड बाहर निकाला दो भाभी की चूत से गाढा गाढा सफेद फैन सा फैलता रहा। उन्होंने पैण्टी से उसे पौछा भी नहीं जैसी उनकी आदत थी। निढाल पड़ी रहीं। शिशिर ने उनका हाथ पकड़ा तो शिकायत के लहजे में बोलीं

'देखो तुमने इसकी क्या हालत कर दी है। हथौड़ा सा चलाते हो। मैं अब राकेश को रात में कैसे दूँगी। इसे देख कर उन्हें शक हो गया तो।

शिशिर ने कोमलता से उनका हाथ धाम लिया। सुनीता भाभी ने उसे दोनों बाहों में लाड़ से भर लिया और सीने में छुपा लिया।

11

सुनीता

होली के आनन्द के बाद जब भी शिशिर की मुझे भोगने की तबियत होती कह देता “भाभी परॉटे सेकने हैं 24 घंटे का उपवास रखना”। जब मेरी तबियत मचलती शिशिर से कहती “हथौड़ा लूगीं”। मैं पूरी तरह सन्तुष्ट थी। राकेश भरपूर चोदता था। स्पेशल चुदाई शिशिर से कराती रहती थी। गुप की महफिल के बाद खासतौर पर मुझे हथौड़े की जरूरत पड़ती थी। शिशिर का व्यवहार मेरी तरफ कोमल बना हुआ था केवल चोदते समय वह कोई लिहाज नहीं करता था। मैं बहुत खुश रहती थी।

गर्मियाँ शुरू हो गयीं थीं। गर्मियों में 10 या 15 दिन के लिये या तो हम लोग रजनी के यहाँ जाते थे या रजनी और रूपेश हमारे यहाँ आ जाते थे। इस बार वह लोग हमारे यहाँ आये। रजनी और मैं कॉलिज के जमाने की सहेलियाँ थीं पक्की दोस्त। एक दूसरे के बारे में सब कुछ जानती थीं। हम

दोनों ही खुबसूरत समझी जाती थीं। रजनी मेरे से ज्यादा लंबी थी और दुबली भी। मेरी बॉडी शुरू से ही सॉचे में ठली हुई थी। रजनी तबियत की मस्त थी। खुल कर सैक्स की बातें करती और आगे बढ़ने के लिये भी तैयार। मैं इस बारे में बिल्कुल पक्के खयालें की। अब रजनी के सीने और कूल्हों पर मॉस चढ़ गया था लेकिन वदन उसका इकहरा ही था आकर्षक। मेरी शादी रजनी से दो साल पहले हो गयी थी। रजनी की शादी हुई तो उसके पति रूपेश मेरे ऊपर दीवाने हो गये। हमें चोदने के लिये बेचैन रहने लगे। रजनी को भी उन्होंने तैयार कर लिया। शादी के थोड़े दिनों बाद ही रजनी ने मेरे से कहा “रूप तेरी चूत की सैर करना चाहता है बदले में राकेश को मैं अपनी नयी नबेली का रस चखा दूँगी”। मैंने एकटूक जबाव दिया “मैं राकेश को पूरी तरह समर्पित हूँ ऐसा कुछ भी नहीं करूँगी”। जानबूछ कर मैंने पता नहीं किया कि राकेश को रजनी ने रसपान कराया या नहीं। रजनी के आने पर राकेश की खुशी देख कर लगता था कि वह स्वाद चख चुके थे। इस बात पर इसके बाद परदा पड़ गया था।

जैसे ही रजनी मुझसे मिली कह उठी “लगता है तुम्हें यह जगह रास आ गयी है बडी खुश दिखती हो”। जल्दी ही रजनी और रूपेश सबसे घुलमिल गये। शिशिर से रूपेश की भी पटने लगी। गुप की महफिलों में भी दोनों ने खुब बढ बढ के भाग लिया। रजनी ने तो ऐसे किस्से सुनाये कि उस रात जरूर लोगों ने वीवियों से जम कर कसर निकाली होगी। ज्यादा दिन तो सैर सपाटों में ही निकल गये। जब तब शिशिर और कुमद या अकेला शिशिर भी सामिल हे जाते थे। जो बात कोई जान पाया था रजनी इतनी जल्दी भाँप गयी बोली “अब तुम्हारी खुशी का राज समझ में आया। शिशिर से इश्क लड़ाया जा रहा है”। मैं लाल हो गयी बोली “तुम भी रजनी गजब हो शिशिर मेरा देवर है”। रजनी बोली “सब जानती हूँ”।

उसके बाद मैं कुछ चौकन्नी रहने लगी। लेकिन इस बीच ही शिशिर पराँठे सेकने की फरमाइश कर बैठा। मैंने समझाया कि अभी रजनी रूपेश हैं लेकिन नहीं माना। दिन में ही समय निकाल कर उसने मुझे बहुत ही जबरदस्ती से चोदा। मैं त्राहि त्राहि कर उठी। चूत पर इतनी चोटें पड़ी थी कि मैं ढीक से चल भी नहीं पा रही थी। अपनी दोनों टाँगें फैला फैला के चल रही थी। शाम को रजनी ने देखा तो मेरी चूत पर चिउँटी काटी। मेरे मुँह से जोर से शी निकल गयी।

रजनी बोली “इसकी कसके रगड़ाई हुयी है क्या”। लेकिन राकेश तो ऐसा नही करता। क्या बात है शिशिर से लगवा के आयी हो”।

उसने मेरी चोरी पकड़ ली थी। मैं बोली “क्या करूँ रजनी वह माना ही नहीं”।

रजनी ने उलाहना देते हुये कहा “जब रूप ने माँगी थी तो साफ मना कर दिया था कि मैं तो बस राकेश को ही देती हूँ”।

मैं”हाँ मैं केवल राकेश की हूँ। शिशिर स्पेशल है हमारा ही”।

रजनी”अरे जाओ ऐसे लोग जिस किसी पर भी फिसलते रहते हैं”।

मैं “न रजनी यह केवल मेरा और शिशिर का सम्बन्ध है भाभी और देवर का”।

रजनी “अगर मैंने शिशिर को फॉस के दिखा दिया तो” ।

मैं “तो जो चाहोगी दूँगी । लेकिन क्या सबूत दोगी” ।

रजनी “शिशिर का अण्डरवियर दूँगी मेरी चूत के रस से पौछा हुआ चाहो तो सूँघ के देख लेना” ।

रजनी को अब एक मिशन मिल गया शिशिर को सिड्यूश करने का ।

12

रजनी

सुनीता को उकसाना तो एक बहाना था । सुनीता को देख कर मेरी चूत भी शिशिर से बैंग कराने के लिये बेकरार हो रही थी । शर्त के बाद मुझे खुला मौका मिल गया । डोरे डालने के लिये मैंने स्त्री सुलभ हथियार का स्तेमाल किया जिसमें शरीर की भाषा नैनों की भाषा और प्रेम की भाषा सामिल थी । मैं बड़ी सेक्स भरी आवाज में उससे बातें करने लगी । नैन मैं रस भर के कहती “मैं भी तो तुम्हारी भाभी हूँ । सुनीता जैसा मेरा भी तो अधिकार है” । कभी वदन को ऐंठ कर कुटिलता से कहती “रात को तो मेरी हालत खराब हो गयी” । आफिस फोन कर देती कहीं ले जाने या लंच पर ही ले जाने के लिये । रैस्ट्रॉरेंट में बड़े टाइट कपड़े पहिन कर जाती जिसे मेरी निप्पिल के आकार साफ दिखायी देते चूतड़ के उभार साफ नजर आते । बात बात पर उस पर गिर पड़ती कंधे पर सिर रख देती । साथ में सेक्स भरी बातें भी करती जाती । इन सब का असर यह हुआ कि शिशिर मेरे से बहुत खुल गया । दो मतलब लिये हुये सैक्स भरा मजाक भी करने लगा । जल्दी ही एक दिन शिशिर के ऑफिस में ही मैंने हाव भाव से साफ जाहिर कर दिया कि अब क्यों देर करते हो लगाओ न मुझे में और उससे सट कर मैंने उसका हाथ पकड़ लिया । लेकिन शिशिर पीछे हट गया । उसने एक दम हाथ नहीं झटका न ही मुझे धकेला बरन बाहर चलते हुये बोला “चलो घर चलें कुमुद इंतजार कर रही होगी” ।

मैं समझ गयी कि लोहा पूरी तरह गरम करने के लिये शारीरिक तरीके से बढने की जरूरत है । मैं शरीर का मजा देने के लिये मौके की तलाश में थी और वह मौका मुझे मिल गया । शहर में नुमायश लगी थी । सुनीता राकेश शिशिर कुमुद मैं रूप सब लोग गये । मैं टाइट सलवार सूट में थी । एक जगह स्टेज पर गाने बजाने हो रहे थे । लोग घेरा बना के जमा थे । अँधेरा हो रहा था और वह जगह ज्यादा ही अँधेरी थी । हम सब लोग भी गाने सुनने के लिये खड़े हो गये । मैं शिशिर के सामने खड़ी हो गयी । अनजानी सी पीछे हुई और अपने पीछे का हिस्सा उसके सामने से चिपका दिया । मेरी चूतड़ों की गोलाइयाँ उसकी जाँघों में पूरी तरह फिट हो गयीं थीं । मैं दरार में उसके सख्त होते हुये लंड को महसूस करने लगी थी कि तभी वह वहाँ से हट गया और सुनीता के पीछे जा कर खड़ा हो गया । सुनीता के चेहरे पर एक मुस्कान उभरी जो मुझे चिड़ाने के लिये भी थी और शिशिर की उसको लंड लगाने की मक्कारी पर भी ।

मैंने सीधी डोज देने की ठान ली क्योंकि मेरे वहाँ रहने में कुल छह दिन और रह गये थे जिनमें मुझे अपनी मनमानी करनी थी। अगले ही पिकनिक थी। मैंने उस दिन साड़ी पहनी लेकिन अन्दर पैण्टी नहीं पहनी। पिकनिक में चादर पर मैं शिशिर के सामने बैठी घुटनों को ऊपर करके। जब देखा कि लोग नहीं देख रहे हैं तो अपनी टाँगें थोड़ी चौड़ी कर दीं जिससे अन्दर का नजारा दिख सके। मैंने नोट किया कि शिशिर के ऊपर असर पड़ा है। वह दबी आँखों से मेरी साड़ी के अन्दर झाँक रहा था। ऐसा मैं कभी कभी ही कर पा रही थी क्योंकि इतने लोगों के बीच में बैठी थी लेकिन उनको शक भी नहीं हो सकता था कि मैंने पैण्टी नहीं पहनी है। अपनी बार मौका मिला तो मैंने टाँगें पूरी खोल दी इतनी कि मेरी चूत का मुँह भी खुल गया होगा। अब नजारा उसके सामने था और वह भी जैसे सब कुछ भूल कर आश्चर्य से घूरे जा रहा था। मैं भी उसकी तरफ मक्कारी से मुस्करा रही थी।

शिशिर सोच रहा था ‘ओ माइ गॉड कैसी फूली फूली रसभरी चूत है सुनीता भाभी से कम नहीं’

सुनीता की नजरों से यह खेल छुपा न था। जब सुनीता ने शिशिर को रजनी की चूत को घूरते हुये देखा तो हैरानी भी हुई और शिशिर पर गुस्सा भी आया। उसने आवाज दे कर शिशिर को कार से खेल का सामान लाने को भेज दिया।

जब अकेले में शिशिर भाभी भाभी करता हुआ सुनीता के पास आया तो सुनीता बोली “देवर जी बड़ी लार टपक रही थी। ये समझ लेना कि कहीं और मुँह मारा तो अपनी भाभी से पराँटे कभी भी नहीं खा पाओगे”।

मैंने सुनीता की चालाकी जान ली थी जब उन्होंने शिशिर को हटा दिया। उसके बाद उन लोगों को कुछ घुसपुस करते हुये भी देखा। समझ गयी कि मान मनौअल चल रहा होगा क्योंकि सुनीता को अपना कण्ट्रोल खतम होतो हुये दिख रहा है। मुझे अपनी चूत के पावर पर भरोसा था। जानती थी ऐसी चूत देखने के बाद कोई अपने को काबू में नहीं रख सकता। उस रात मैंने उधेड़बुन करके कैसे भी शिशिर से अकेले में मिलने का समय निकाला।

मैं शिशिर से झूठी नाराजी दिखाती हुई बोली “क्या देखे जा रहे थे। आज मैं पैण्टी पहिनना भूल गयी तो तुमको शर्म नहीं आती अन्दर ताकझाँक करते हो”।

शिशिर “जब देखने लायक चीज होगी तो आँखें अटकेंगी हीं”

मैं “तो फिर चहिये है उसको”

शिशिर “उसके दाबेदार तो और भी हैं। आप मेरी भाभी की सहेली हैं हमें आपकी इज्जत करनी है”।

मैं कुछ बौखला सी गयी “सुनीता और हम एक हैं। तुम और सुनीता मैं क्या है मुझे सुनीता ने सब

बता दिया है फिर हमको लेने में क्यों परहेज करते हो” ।

शिशिर मेरा हाथ पकड़ कर अनुनय भरे स्वर में बोला “जब आप सब जानती ही हैं तो इन संबंधों को हम लोगों के बीच में ही रहने दीजिये न। सैक्स छोड़ दीजिये बाकी सब बातें मैं आपकी सुनीता भाभी की ही तरह मानूँगा। आप को कोई शिकायत नहीं होगी” ।

उसकी तरफ देख कर कहने को कुछ और नहीं रह गया था ।

मैं सोच भी नहीं सकती थी कि मेरी जैसी औरत देने को तैयार हो और कोई आदमी लेने से मना कर दे। सुनीता भी शायद नहीं सोच सकती थी क्योंकि जब मैंने बताया तो अचानक खुशी से वह उछल पड़ी और मेरे गले लग गयी। सब कुछ बता देने के बाद

मैंने सुनीता से कहा “अच्छा भई मैं भाभी भक्त देवर को मान गयी लेकिन जाने के पहले उसका मजा तो चखा दो जिसने मेरी सहेली की यह हालत कर दी है” ।

सुनीता पहले तो मुखर गयी। जब बहुत मिनितें कीं तो बोली “अच्छा देखेंगे” ।

13

सुनीता और शिशिर

उसी दिन शाम को शिशिर और कुमुद सुनीता के यहाँ दिनर पर आये। शिशिर का बर्ताब मेरी तरफ बड़ा नरम था जैसे कुछ हुआ ही न हो।

मैंने सुनीता को उकसाया तो अकेला पा कर उसने शिशिर से बात की।

सुनीता “तुम बाकई भाभी के हकदार हो। तुमको अपने को सोंप कर मैंने कोई भूल नहीं की। रजनी वापिस जा रही है। वह मेरी बढी अन्तरंग है। उसकी तमन्ना पूरी कर दो। समझो मेरी तरफ से यह तोहफा है” ।

शिशिर आश्चर्य से “भाभी क्या बात करती हो मैं तुम्हारे और कुमुद के अलावा किसी को नहीं छुऊँगा फिर तुन ही तो उस दिन मुझ पर लांछन लगा रहीं थीं। मेरे से अलग हो जाना चाहती थीं” ।

सुनीता “वह तो तुमको समझने के लिये कहा था। अब उसकी अच्छी तरह से मरम्मत कर दो कि शर्त लगाने की हेकड़ी भूल जाये” ।

शिशिर “भाभी मैं तो तुम्हारे बगैर किसी को नहीं करूँगा” ।

सुनीता हँस के “तो फिर कुमुद को क्यों लगाते हो” ।

शिशिर “कहो तो करना छोड़ दूँ” ।

सुनीता “नहीं नहीं तुम कहो बात ले जाते हो । मैं कह रही हूँ कि तुम रजनी को करो बस” ।

शिशिर “तो आप को भी मौजूद रहना पड़ेगा” ।

सुनीता “ यह कैसे हो सकता है रजनी मेरे सामने कैसे करायेगी” ।

शिशिर “क्यों नहीं करायेगी जब आपकी अन्तरंग है आपसे फरमायश कर सकती है” ।

सुनीता “अच्छा देवर जी अब समझी तुम्हारी चालाकी दोनों को एक साथ लगाना चाहते हो” ।

शिशिर “जाओ मैं नहीं करूँगा” ।

सुनीता “अच्छा भई दोनों हाजिर हो जायेंगी” ।

14

रजनी

मुझे यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि सुनीता ने शिशिर को तैयार कर लिया है । सुनीता का साथ रहना भी मुझे भा रहा था । सुनीता ने जब प्रश्न उठाया कि लेकिन राकेश और रूप से बच कर मिलोगी कैसे तो मैंने उसको चैलेन्ज जैसा लेते हुये कहा तुम इसकी फिक्र न करो मेरे ऊपर छोड़ दो । लेकिन यह बड़ी समस्या थी । हम लोग छुट्टियों में थे और सब लोग साथ ही निकलते थे । उनसे अलग रह कर एक रात निकाल पाना टेड़ी खीर था । मैंने एक प्लान बनाया । सुनीता को नहीं बताया नहीं तो वह मना कर देती । मैंने सोचा कि रूप और राकेश को किसी और के संग लगा दें । ठीक भी था जब हम लोग मजे ले रहे थे तो उनको भी मजे ले लेने दें । सब के ऊपर नजर दौड़ायी तो मिसिज अग्रवाल ठीक लगीं । अच्छा भरा वदन था । खूब उभार लिये सीने थे । भारी सेक्सी चूतड़ थे । और उनके जल्दी राजी हो जाने की उम्मीद भी थी । मैंने प्लान पर काम करना चालू कर दिया ।

सबसे पहले मिसिज अग्रवाल का तैयार करना था । उनसे अकेले मैं मिली तो सैक्स की बातों के साथ उनकी सैक्सी बॉडी की बड़ी तारीफ

कर दी और कहा “बुरा न मानो तो एक बात कहूँ रूप तो तुम्हारे ऊपर मर मिटा है । जब भी मुझे करता है तुम्हारा नाम ले लेकर ही लगाता है” ।

मिसिज अग्रवाल शर्माती हुई बोलीं “ओ माँ बड़े बुरे हैं वो” ।

मैंने उनके हाथ को दबाते हुये कहा “बुरे नहीं जब तुम्हारे नाम का लगाते है तों तारे नजर आ जाते हैं । तुम लगवाके देख लो न” ।

मिसिज अग्रवाल “तुम उन्हें परमीशन दे दोगी” ।

मैं “जिस सुख को लेना चाहते हैं क्यों रोकूँ । तुम अपनी बताओ तुम्हें मंजूर है” ।

उन्होंने आँखों से हामी भर दी।

उसी रात मैंने रूप से चुदायी करायी। उसकी मन की भरी बात कर तबियत खुश कर दी।

जब वह स्ट्रोक लगा रहा था मैंने बात छोड़ी “रूप मिसिज अग्रवाल का दिल है तुम्हारे ऊपर तुमसे मजा लेना चाहती हैं”।

रूप ने पूछा “तुमको कैसे मालूम हुआ”।

मैंने कहा “खुद उन्होंने मुझ से इशारे में कह दिया। तुमसे कहने की हिम्मत नहीं हुई कि तुम मना न कर दो”।

यह बातें करते हुये रूप के स्ट्रोक की रफ्तार बढ़ गयी।

मैंने बात जारी रखी “लेकिन रूप एक बात है उनका ज्यादा माल खाने का मन है। तुम्हारा और तुम्हारे दोस्त राकेश दोनों का साथ साथ खाना चाहती हैं”।

रूप का मन थोड़ा बुझ गया “पता नहीं राकेश का। वह उसकी बीवी पता नहीं”।

मैंने चूत कस कर लंड पर जमाते हुये उसको उकसाया “तुम्हारा दोस्त है तैयार करो उसको। तर माल खाने को मिल रहा है”।

रूप ने जबाव में पूरा पेलते हुये कहा “करता हूँ उसको तैयार”

मैंने चूत उसकी झाँटों से रगड़ते हुये कहा “डार्लिंग जल्दी करना वह मुझसे पूछेगी”।

उसके बाद रूप के चोदने में बहुत उत्साह आ गया।

दूसरे दिन ही जबाव मिल गया। राकेश बखुशी तैयार हो गया। मुझे अब फिर से संगीता अग्रवाल से बात करनी थी। मैं पुराने जमाने की कुटनी का रोल कर रही थी। पल्लियों चुदवाना चाहती थीं पति चोदने को बेकरार थे लेकिन कितनी अजीब बात थी दोनों ही किसी और के लिये दीवाने हो रहे थे। किसी और को चूत देने के नशे में मैंने कैसी कैसी चालें चलीं थीं। मिसिज अग्रवाल से मिली तो अलग ले जाकर चिउँटी काटती हुई मैं फुसफुसा के बोली “तेरे मजे हैं रूप और राकेश दोनों ही लगाना चाहते हैं”। संगीता समझी नहीं बोली “अभी तो एक बार मिलना बहुत है”। मैंने कान में कहा “एक साथ ही दोनों हों” और मैंने उसका हाथ दबा दिया।

संगीता के चेहरे पर घबड़ाहट थी बोली “न बाबा न ऐसा कैसे हो सकता है”।

मैं झूट बोली “बड़ा मजा आता है मैं तो कई बार करा चुकी हूँ। सोचो दो लंडों का अलग अलग स्वाद मिलेगा”।

संगीता के चेहरे पर बासना नाच उठी “सच क्या मैं करा पाऊँगी”।

मैंने हाथ दबा कर उसके तसल्ली दे दी। वह भी लगवाने के लिये उत्तेजित हो गयी।

भाग्य से मिस्टर अग्रवाल को दो दिन बाद बाहर जाना था। उस दिन की रात मिसिज अग्रवाल के

यहाँ रूप और राकेश के लिये बुक हो गयी। मिसिज अग्रवाल खाना बड़ा जायकेदार बनती थीं और खुद भी जायकेदार थीं। रूप और राकेश की बड़ी दावत पक्की थी। हम लोगों के लिये मैदान साफ हो गया। मैंने सुनीता को सुझाया कि वह घर में इन्तजाम न करे। किसी भी कारण से रूप और राकेश वापिस आ पहुँचे तो हम लोग रंगे हाथों पकड़े जायेंगे। सुनीता ने शिशिर को खबर कर दी।

15

सुनीता रजनी और शिशिर

शिशिर ने एक आलीशान होटल में रूम रिजर्व कर दिया। सुनीता और रजनी आठ बजे रात को होटल पहुँची शिशिर को साढे आठ बजे आना था। कमरे को देख कर दोनों दंग रह गयीं। शिशिर ने पाँच स्टार होटल का एक पूरा स्वीट बुक कर दिया था। खाने के लिये डाइनिंग टेबिल बैठने के लिये सोफा चमचमाता बाथरूम क्वीन साइज बैड और उसके सामने ढेर सारी खुली जगह। शिशिर साढे आठ के पहले ही पहुँच गया। बैल दबाने पर दरवाजा खुला तो सुनीता और रजनी सामने खड़ी थीं एक दम सजी धजी। सुनीता ने दूध सी सफेद साड़ी पहिन रखी थी। उसका गोरा रंग उससे मिल गया था। गले में मोतियों का हार। कानों में हीरे के बड़े टाप्स। सुर्ख लिपस्टिक रँचे होंठ और कमान सी आँखें। रजनी ने धानी कुर्ता सफेद चूड़ीदार। हाथों में ढेर सारी हरी चूड़ियाँ। मैचिंग कीमती हार इयरिंग और सुघड़ मेकअप। शिशिर उनको तकता ही रह गया। सुनीता शर्मा के बोली अब आओगे भी या ऐसे ही खड़े रहोगे। शिशिर जैसे सोते से जाग गया हो।

उसने हाथ के बैग से एक सफेद मोगरे की माला निकाली और सुनीता से बोला “भाभी ये आपके लिये”। सुनीता उसकी ओर पीठ करके खड़ी हो गयीं। उसने माला उनके जूड़े में बाँध दी। मोगरा महक उठा। पलट कर सुनीता ने उसके गले में बाँहें डाल दी। शिशिर ने उन्हें खीच कर अपने से चिपका लिया। दोनों ऐसे ही जुड़े थोड़ी देर खड़े रहे। सुनीता ने एक चुम्बन उसके होंठों पर लेकर अपने को अलग किया।

शिशिर रजनी की तरफ बढ़ा और बैग से सुर्ख गुलाब का बुके उनकी ओर करके बोला “रजनी जी ये आपके लिये”

रजनी बोली “रजनी नहीं भाभी”

शिशिर ने अपने को सुधारते हुये कहा “रजनी भाभी यह आपके लिये”।

रजनी ने बढ़ के दोनों बाँहें उसके गले में डाल दी और अपने होंठ कसके उसके होंठों पर गड़ा दिये। शिशिर उनको चूमता रहा।

इस बीच सुनीता डाइनिंग टेबिल पर जार में रखी सुगंधित मोमबत्ती जला दी थी और उसकी भीनी भीनी खुशबू कमरों में भरने लगी थी। सॉफ्ट म्यूजिक लगा दिया था। सुनीता ने लाइट ऑफ कर दी। शिशिर ने सुनीता की ओर देखा। मोमबत्ती की मंद रोशनी में वह परी सी लग रही थी। रजनी की कमर में हाथ डाले हुये शिशिर सुनीता की ओर बढ़ा और उसको अपने से चिपका लिया। रजनी उ

सके बाँयें कंधे से चिपकीं थीं सुनीता दाँयें से। इसी हालत में वह लोग थिरकते रहे। शिशिर कभी सुनीता को चूमता था कभी रजनी को। शिशिर का लंड गरमाने लगा था। रजनी उस पर हाथ फेरने लगी थी। उसने झुक कर सुनीता के दाँयें उभार को ब्लाउज के ऊपर से ही मुँह में ले लिया। सुनीता सी सी कर उठी।

सुनीता ने फुसफुसा के कहा “देवर जी पहले रजनी को सुख दीजिये मैं तो आपके पास ही हूँ आज की रात उसकी है”।

शिशिर ने रजनी को प्यार से चूम लिया “रजनी भाभी भी तो अपनी हैं” फिर सुनीता को और भीजते हुये बोला “भाभी शुरूआत तो मैं आप से ही करूँगा लेकिन तुम दोनों इतनी अच्छी लग रही हो कि मैं कुछ भी नहीं उतारना चाहता”।

लेकिन रजनी उसका पैण्ट उतार चुकी थी। अण्डरवियर खींच कर रजनी ने उसके लंड को मुट्टी में बाँधा तो जैसे लोहे की गरम रॉड पर हाथ रख दिया हो। शिशिर का बड़ा मोटा और लंबा लंड सॉप की तरह ऊपर मुँह बाये खड़ा था। पत्थर की तरह सख्त।

उसको देखते ही रजनी के मुँह से निकल गया “ओ माई गुडनैस अब समझी सुनीता इतनी दिवानी क्यों हो रही थी”। रजनी शिशिर की बाँहों से खिसक कर नीचे घुटनों के बल बैठ गयी। मुट्टी में बाँध कर उसका लंड सीधा अपने सामने कर लिया और मुँह खोल कर अपने नरम होंठ उसके ऊपर रख दिये। होंठ लगते ही शिशिर की वासना एकदम जाग उठी। हाथ बढा कर शिशिर ने रजनी को उठा लिया और सुनीता की कमर में हाथ डाल कर उन्हें खींचता हुआ बैड तक ले गया। रजनी को बैड के पाँयताने कारपेट पर बैठा दिया और सुनीता को बैड पर चित गिरा दिया। शिशिर ने सुनीता की साड़ी ऊपर तक उलट दी। बाहर के ही नहीं अन्दर के कपड़े उसने कीमती पहिन रखे थे। लेस लगी डिजाइनर पैण्टी पर चूत के पानी से एक बड़ा धब्बा बन गया था। शिशिर ने पैण्टी अलग की। सामने दो चिकनी सपाट जाँघें थीं सन्तरे की रसभरी फॉक की तरह सूजी सूजी चूत की पंगुड़ियाँ थीं जिनके भीतर से गुलाबीपन झाँक रहा था अर्धगोल सुडौल नितम्ब थे जिनके बीच में गहरी दरार थी।

उसके मुँह से निकल गया “भाभी तुम बाकई बहुत खुबसूरत हो”।

दोनों हाथों से उसने सुनीता को खींच लिया और उसकी जाँघें अपने कंधों पर धर लीं। सुनीता का धड़ पलंग पर था नितम्ब पलंग से ऊपर उठे हुये थे और मुँह खोले चूत शिशिर के मुँह से सटी हुई। सुनीता की चूत से मदमस्त अरोमा निकल रहा था। शिशिर ने अपने होंठ सुनीता की पंगुड़ियों से सटा दिये और चूतड़ आगे कर अपना लंड पलंग से टिकी बैठी रजनी के होंठों से लगा दिया।

रजनी ने सिर ऊँचा कर उसका लंड अपने होठों में ले लिया।

जैसे ही शिशिर ने चूत के अन्दर के उभार को होंठों में दबोचा सुनीता के मुँह से एक शीत्कार निकल गई और वह तनकर के धनुष की तरह हो गयी। वह चूत की उठान को होंठों से इस तरह चूसने लगा जैसे सन्तरे की फॉक चूस रहा हो। नीचे बैठी रजनी शिशिर के लंड को जड़ से दाँयें हाथ की मुट्टी में बाँधे पाप्सिकिल की तरह चटखारे लेकर चूस रही थी। शिशिर दोहरे मजे ले रहा था। रजनी ने मुट्टी को लंड के सिरे तक फिसला कर उसके ऊपर की खाल को हटा दिया। लंड का सुपाड़ा निकल

से चूत लाल हो गयी थी। पेट और टॉगों पर जरा स भी ज्यादा मॉस नहीं था। सब कुछ एकदम अनुपात में। ब्लाउज बुरी तरह से मँसला हुआ था जिसमें से सुडौल गोलाइयाँ उभरी हुयीं थीं। सफेद साड़ी में चूत खोले कोई अप्सरा पड़ी थी। रजनी पहली बार अपनी अंतरंग सहेली के अन्दर के भागों को देख रही थी। इस बीच शिशिर बाथरूम चला गया था। रजनी की चूत में आग लगी हुई थी। रजनी ने एक झटके से अपनी सलवार का नाड़ा खोल लिया और चूत के रिसने गीली हो गयी पैण्टी को खींच कर निकाल फेंका। अपना कुर्ता भी निकाल फेंका और बिल्ली की तरह चलती हुई सुनीता के ऊपर आ गयी। वह सुनीता के ब्लाउज के बटन खोलने लगी। रजनी पहली बार ऐसा कर रही थी। सुनीता भौंचक रह गयी।

बोली “रज नीई ये क्या करती हो”।

रजनी तब तक उसका ब्लाउज और ब्रेजियर अलग कर चुकी थी। बड़े बड़े गोले स्पिंग से उछल कर बाहर आ गये थे। रजनी ने देखा तो बोल पड़ी

“सुनीता तू बाकई बहुत खुबसूरत है”।

रजनी ने सुनीता का बायाँ उभार निपिल सहित मुँह में भर लिया और अपनी चूत सुनीता की चूत के ऊपर बैठा दी। जब रजनी की चूत की पंखड़ियों ने सुनीता की चूत के अन्दर रगड़ा तो सुनीता को बहुत अच्छा लगा। उसने रजनी की पतली कमर अपनी दोनों टॉगों के बीच भर ली और अपनी टॉगें उसकी कमर पर कस कर उसकी चूत को और कस कर अपनी चूत में घुसा लिया।

रजनी ने अपनी दाँयी चूची उसके मुँह में दे दी।

शिशिर जब बाथरूम से आया तो उसने देखा कि सुनीता चित लेटी है। रजनी उसके ऊपर लेटी है। रजनी सुनीता की एक चूची चूस रही है और सुनीता रजनी की चूची पर पिली पड़ी है। सुनीता की नारंगी की तरह रस से भरी हुई सुनहरे तराशे बालों वाली चूत रजनी की लम्बी फॉक वाली रसीली सपाट चूत में लॉक है। सुनीता की चूत का एक होंठ रजनी की चूत में घुसा है और रजनी की चूत का एक होंठ सुनीता की चूत के भीतर। दोनों एक दूसरे के चूत के अन्दर के दाने को रगड़ रहीं हैं। चूत को ज्यादा से ज्यादा खुला रखने के लिये सुनीता ने अपनी टॉगें रजनी की कमर पर कस रखी हैं और रजनी ने टॉगें फैला रखी हैं। दोनों कस कस के आवाजें निकाल रहीं हैं।

यह देख कर शिशिर का लंड तन कर उत्तेजना से हिलने लगा। वह आगे बढ़ा और पलंग के पैताने जा कर उसने उन दोनों को बैसी ही गुँथी हालत में पलंग के किनारे तक खींच लिया। पायताने खड़े खड़े ही उसने अपना लंड हाथ से पकड़ा सुनीता की चूत के मुँह पर रखा और एक झटके में ही पूरा अन्दर कर दिया।

सुनीता के मुँह से निकला “उईई मॉााा”।

उसने दो तीन बार उसको अन्दर बाहर पेला। फिर अपना लंड बाहर खींच लिया। फिर से मुट्टी में बाँधा और अबकी बार रजनी के सुराख से मिलाया और जोर लगा के घुसाता ही गया।

रजनी कराह उठी “ओ मा ई गॉ ड”।

दो तीन बार उसने उसकी चूत में ही अन्दर बाहर किया फिर खींच लिया। फिर उसने सुनीता की बुर

उईईई मॉऑऑऑऑऑऑऑऑऑऑ में ः मरीईईईई “

“ऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊऊ”

“फुअफुअफुअफुअफुअफुअफुअ”

शिशिर ने और स्पीड बढ़ायी तो रजनी ने सुनीता की चूची को छोड़ अपने होंठ उसके होंठों पर गढा दिये। शिशिर ने हाथ बढ़ा कर सुनीता की दोनों चूचियाँ हथेलियों में थाम लीं और शंटिंग चालू रखी। दोनों होंठ चूसती जाती थीं और ‘ऊँऊँ’ की आवाज करती जाती थीं। जैसे ही शिशिर ने चूचियों की घुंडियों को उँगलियों में मसला सुनीता चिल्ला उठी

“ओ शिशिर मैं तो ग ई ई ई.....मत निकालो ओ बाहरररररर”।

इसके साथ ही अपनी कमर उठा कर उसने रजनी की चूत से इतने कस के सटा ली कि रजनी हिल न सकी। उसकी रगड़ से रजनी का पानी भी छूट गया “अआआआआ मैंऐऐं क्याआ कखखखखखखखखखखखखखखखख मॉऑऑऑऑऑऑऑऑऑऑ में झड़झड़झड़झड़झड़झड़.....।”

शिशिर ने जल्दी से पूछा “रजनी भाभी आपने बर्थ कंट्रोल पिल ली है”।

रजनी के हों कहते ही शिशिर ने रजनी की बुर में अपना पूरा लंड अंदर किये हुये ही सारा लोड उ गलना चालू कर दिया।

करीब करीब एक साथ तीनों लोग सिहरते रहे। जब शिशिर ने लंड बाहर किया तो रजनी की मसली चूत के अन्दर से गाढा गाढा सफेद लिक्विड बाहर निकल कर सुनीता की चूत पर गिर रहा था।

रजनी ने उठ कर अपनी चूत को पौंछा। सुनीता ने हाथ से खर्चा कर शिशिर को अपनी बगल में लिटा लिया। शिशिर ने हाथ बढ़ा के रजनी को अपनी दूसरी तरफ लिटा लिया। दोनों ने शिशिर के एक एक कंधे पर सिर रख लिया।

रजनी बोली “थैंक यू शिशिर मैं पूरी तरह संतुष्ट हो गयी हूँ खासतौर पर तुमने मेरी सहेली से मेरी जान पहचान करवा दी”।

सुनीता लजाती हुयी बोली “धत्त ऐसा भी कोई करता है”।

शिशिर बोला “रजनी भाभी अभी कहाँ अभी आपसे अकेले की मुलाकात तो करनी है।

रजनी “न बाबा और मैं न ले सकूँगी”।

सुनीता “शिशिर इसको मत छोड़ना। इतनी इठलाती थी हेकड़ी तो बन्द हो इसकी”।

शिशिर ने सुनीता को भींच कर चूम लिया फिर रजनी को भींच कर उसको चूम लिया।

जब सुनीता और रजनी शिशिर से मुलाकात का बेसूबी से इन्तजार कर रहीं थीं ठीक उसी समय राकेश और रूपेश मिसिज अग्रवाल के घर पर दस्तक दे रहे थे। मिसिज अग्रवाल ने दरवाजा खोला। एकदम सजी धजी पूरा श्रंगार किये। कमनीय तो थी हीं और मादक हो उठी थीं। पूरे उठे हुये जोबन उभरे गोल गोल चूतड़ दमकता रंग आँखों में सुरूर। मोटी नहीं थी पर शरीर अच्छा भरा हुआ। उन्होने राकेश का हाथ पकड़ते हुये कहा “आइये देवर जी” फिर ब की ओर देखते हुये “आइये रूपेश जी”। कोई हिचकिचाहट नहीं थी न शर्मा रही थीं। अन्दर आ कर राकेश ने कीमती परफ्यूम प्रजेण्ट की तो वह उससे सट के खड़ी हो गयीं बोली “लीजिये लगा दीजिये”। राकेश उनके उभार की नजदीकी महसूस करने लगा था। उसके शरीर में इनइनहट सी लगने लगी थी।

वह बोलीं “बैठिये”।

लिविंग रूम में शानदार सोफे पड़े हुये थे। खुशहाली और सुरुचि चारों ओर नजर आ रही थी। राकेश और रूपेश बड़े से सोफे पर बैठ गये।

मिसिज अग्रवाल ने पूछा “आप लोग कुछ हार्ड ड्रिंक लेना चाहेंगे मैं तो लेती नहीं”।

राकेश “अगर आप साकी बनेंगी तो जरूर लेंगे”।

मिसिज अग्रवाल “आप बनाइये तो सही मैं सब कुछ बनूगी। आज की रात आपके नाम है अगर कुछ कमी रह गयी तो सुनीता और रजनी शिकायत करेंगी”।

राकेश और रूपेश दौनों ड्रिन्क बना लाये और मिसिज अग्रवाल के लिये कोक। मिसिज अग्रवाल बड़ी बेतक्लुफी से उनके सामने लवसीट पर बैठ गयीं। दौनों टॉगें चौड़ाई हुई थीं। अगर साड़ी से न ढकी होती तो सामने चूत का पूरा मुँह खुला दिखता। उन दौनों को नमकीन देने को ठीक उनके मुँह के सामने इस तरह झुकती थी कि उनकी छातियाँ निष्पिल तक दिखायी देती थीं। रूपेश से न रहा गया तो उनको पकड़ा तो उसके ऊपर इस तरह गिरीं कि हाथ उसके लण्ड पर रख दिया फिर उठती हुई बोलीं “तसल्ली रखो लाला जी”।

अब की बार सामने और बेतक्लुफी से बैठीं। टॉगें चौड़ाये दौनों पैर सोफे पर रख लिये। टॉगों के ऊपर की साड़ी ऊपर हो गयी थी नीचे की नीचे गिर गयी थी सामने चूत को केवल सिल्लिकन अण्डरवीयर के हुये थी जिसके ऊपर एक धब्बा उभर आया था। दो एकदम फक्क गोरी सुडौल रानें उनके बीच फँसी हुई पतली काली पट्टी वह दौनों उत्तेजित होने लगे थे। लण्ड उठने लगे थे जिनको वह बढे ध्यान से देख रहीं थीं।

राकेश कहने लगा “भाभी तुममें गजब है ऐसी चीज को अग्रवाल कैसे छोड़ कर चले जाते हैं”

मिसिज अग्रवाल “जाने के पहले अपनी पूरी कसर निकाल लेते हैं बाकी आने पर पूरी कर लेते हैं। हाथ लगाने से दुख रही है। पहले से तुम लोगों से वायदा न होता तो आज मैं आराम कर रही होती”।

रूपेश ने कहा “भाभी ऐसा भी क्या तड़पाना नाहीं छुपाते हो नाही मुँह दिखाते हो”।

मिसिज अग्रवाल ने आँख नचाई “मुँह दिखाई की रश्म होती है”।

राकेश उठते हुये “लो मैं रश्म पूरी किये देता हूँ”।

मिसिज अग्रवाल जल्दी से उठते हुये “ना ना पहले दूल्हे मियाँ को तो देखने दो”। वह रूपेश और राकेश के बीच में सट के बैठ जाती हैं। दोनों तरफ हथेलियों से दोनों लण्ड थाम लेती हैं। राकेश कमर में हाथ डाल के अपनी तरफ खींच लेता है। वह सामने से छातियाँ पूरी गड़ा के कस के चिपक जाती हैं उसके होंठों को अपने होठों से दबा लेती हैं और नीचे हाथ डाल के उसका लण्ड बाहर निकाल के फुसफुसाती हैं “ये तो बहुत ज्यादा दबंग है”।

राकेश पीठ पर ब्लाउज के बटन और ब्रेजियर के हुक खोल देता है। रूपेश उठ कर के उनकी साड़ी खींच लेता है और आगे हाथ डाल के नाड़ा खोल के पेटीकोट खींच लेता है। वह उतारने के लिये पैण्टी पकड़ता है कि मिसिज अग्रवाल उठ कर के खड़ी हो जाती हैं “इसको अभी रहने दो”। उनका पूरा वदन दमकता है। उम्र के बावजूद उनकी भरी छातियाँ गोल और सखी से खड़ी हुई हैं। काली घुण्डियाँ तन करके आधा इंच ऊंची हो गयीं। वदन पर कोई थुलथुल माँस नहीं।

वोलीं “पहले आप लोगों की बारी है”। इसके साथ ही वह राकेश का पैण्ट उतारने को बड़तीं हैं लेकिन इसकी जखत नहीं पड़ती वह दोनों अपने अपने कपड़े उतार फेंकते हैं। दोनों का तन्नाया लण्ड खड़ा होता है।

मिसिज अग्रवाल के मुँह से निकल जाता है “हे माँ आप दोनों तो एक दूसरे से होड़ ले रहे हैं मैं कैसे लूगी ये”। उत्तेजना में राकेश उनको बाँहों में बाँध लेता है। वह राकेश को लिये हुये सोफे पर गिर जाती हैं फिर फिसल कर नीचे कार्पेट पर घुटने के बल बैठ जाती हैं। राकेश के लण्ड की सुपाड़ी खोल कर अपने होठों में दबा कर उसको चूसने लगती हैं। राकेश का शरीर एकदम तन जाता है। रूपेश पीछे से उनकी चूचियाँ जकड़ लेता है तो दूसरा हाथ बढा कर वह उसका लण्ड पकड़ लेती हैं और लण्ड पकड़े हुये राकेश के बगल में बैठा लेती हैं। राकेश को अब पूरा का पूरा निगलती जाती हैं और रूपेश के लण्ड मुट्टी मारती जाती हैं। मिसिज अग्रवाल ने दोनों गोलाइयाँ राकेश के पैरों पर दबा ली हैं। राकेश हाथ डाल कर उनकी चूचियों को मुँह हथेलियों में भींच लेता है और अपने होंठ उनकी चिकनी सुडौल पीठ पर चिपका देता है। मिसिज अग्रवाल की घुटी घुटी चीख निकल जाती है वह बुदबुदाती जाती हैं जिसमें प्लेजर मिला हुआ है। व पीछे से पैण्टी के अन्दर हाथ ले जाके बीच की उँगली उनकी चूत के अन्दर कर देता है जो तर हो रही है। मिसिज अग्रवाल एकदम उछल जाती हैं। राकेश के लण्ड पर दाँत गड़ा देती हैं। रूपेश का लण्ड बहुत कस के मुट्टी में जकड़ लती है। वह दोनों चीख उठते हैं। मिसिज अग्रवाल की रफ्तार बहुत तेज हो जाती है साथ ही वह अपनी चूत भी रूपेश की उगली पर ऊपर नीचे करती जाती है। क्योंकि रूपेश उगली ज्यादा अन्दर नहीं कर सकता है। तीनों लोग जोर जोर से आवाजें निकाल रहे हैं।

सबसे पहले मिसिज अग्रवाल चिल्लाती हैं “ओ माँआँगा मैं तो गइईई”। वह बड़ी जोर से राकेश के लण्ड को चूसती हैं। रूपेश के लण्ड पर कस के मुट्टी मारती हैं। वह बड़ी देर झड़ती रहती हैं साथ ही जोरों से शीईई... की आवाज करती रहती हैं। राकेश अपना गाढा रस उनके मुँह में उगल देता है। रूपेश की धार हवा फब्बारे की तरह छूट जाती है। मिसिज अग्रवाल अपना मुँह हटा लेती है। रिस रिस करके सफेदी नीचे गिरती जाती है।

मिसिज अग्रवाल सोफे पर दोनों के बीच बैठ कर उनके सिर अपनी छातियों से चिपका लिया। तीनों देर तक निढाल से पड़े रहे। फिर दोनों को चूम कर उन्होंने बैडरूम में चलने को कहा। बैडरूम में शानदार किंग साइज का बैड पड़ा था और एक दीवाल पर सोफे लगे हुये थे। मिसिज अग्रवाल बाथरूम से आके बोलीं “अब मैं अपनी दिग्राने को तैयार हूँ लेकिन दूँगी तब जब आप अपनी मस्त चुदायी की कहानी सुनायेंगे”।

राकेश और रूपेश वैसे ही नंग धडंग सोफे पर बैठ गये थे। उनके सामने पलंग पर बैठ कर मिसिज अग्रवाल ने एक झटके से अपनी कच्छी खींच कर उतार दी। वह उनके जूस से तर हो रही थी। फिर उन्होंने उँगली में घुमा के उन लोगों की ओर फेंका। वह रूपेश के मुँह पर पड़ी। व ने बड़े प्यार से मस्ती से उसे चूमा और लम्बी साँसों से सूघा। मिसिज अग्रवाल ने टोंगें चौड़ी कर दीं। माई गॉड डबलरोटी की तरह फूली उनकी फुद्दी थी एकदम सपाट। पैर फैलाने से संतरे की फॉक से ओंठ खुल गये थे। बीच में तितली सी क्लीटोरिस उठी हुई थी और उसके नीचे चूत का छेद खुला हुआ था एकदम पिंक गहराई तक गीला और चमकता हुआ। एकदम पकी हुयी मैच्योर। रूपेश के मुँह से निकल गया “ओ माई गॉड ऐसी चूत तो मैंने आज तक नहीं देखी”। दोनों के लण्ड जो उठे हुये थे तन्ना कर सीधे ऊपर हो गये। उठ कर वे पलंग की तरफ बढे।

मिसिज अग्रवाल ने टोका “पहले सुनीता रजनी की चुदायी की बातें”।

अभी बताते हैं उन्होंने कहा पर राकेश ने उनको पलंग पर खींच लिया और टोंगें दोनों ओर कर अपना मुँह उनकी गदूली सी चूत के ऊपर रख दिया। होठों के बीच घुण्डी ले कर चूसने लगा। मिसिज अग्रवाल के मुँह से किल्कारी निकल गयी। रूपेश ने सिरहाने पहुँच कर उनकी एक चूची मुँह मे लेली और दूसरी हथेली में कस के दबा ली। उसका बड़ा सा लण्ड मिसिज अग्रवाल के मुँह के सामने लटक रहा था जो उन्होंने आगे बढ कर मुँह में ले लिया। राकेश उनकी चूत को बहुत बुरी तरह से चूस रहा था। उनकी रानों को दोनों हाथों के जोर से पूरा फैला लिया था और अपना मुँह जितना घुसा सकता था घुसा लिया था। बीच बीच में जीभ उनके में करता था। मिसिज अग्रवाल अपनी चूत उठा उठा दे रहीं थी। रूपेश का लण्ड काफी बड़ा था जो वह पूरा नहीं ले पा रहीं थीं। लेकिन जब राकेश चूत को चाटता था तो वह सिर ऊँचा कर रूपेश का लण्ड पूरा गपक लेती थीं। गाय की बछिया की तरह चटकारे लेकर चूस रहीं थीं। चूतड़ बेचैनी से रगड़ रहीं थीं। जब राकेश ने फिर से जीभ चलायी तो उन्होंने रूपेश के लण्ड से मुँह खींच लिया

“हू हू ऊऊऊऊ ओ माँ ऑॉा तुम न तौओ आग लगाआ दी है। लण्ड डाल दो अपना”

राकेश “पर वो चुदायी की कहानी तोःःः”

“कहानी फिर पहले मेरीई चुदार्यीiiiiiiii” और उन्होंने खुद उसका लण्ड पकड़ कर चूत पर लगाया और चूतड़ उठा कर के घप्प से अन्दर ले लिया।

बोलीं “लगाओ कस कस के”।

राकेश ने तीन चार बार उनको कसकस के पेला। हर झटके पर वह और जोर से लगाने को उ कसाती थीं।

राकेश ने लण्ड बाहर निकाल लिया और उनसे कहा “ आप घुटनों के बल उकड़ू हो जाइय मैं पीछे से लगाऊंगा आगे से आप रूपेश का लण्ड ले लीजिये” ।

मिसिज अग्रवाल पलट के घुटनों और बॉहों के बल उकड़ू हो गयीं। पीछे से राकेश ने लण्ड लगाया। जैसे ही पेला वह सड़ाक से उनकी चूत में घुस गया। उसने हाथ डाल के उनकी दोनों चूचियाँ पकड़ लीं। रूपेश उनके ठीक मुँह के सामने लण्ड तन्नाके खड़ा था। उन्होंने एक मुट्टी में लण्ड पकड़ के मुँह में ले लिया। राकेश निष्पल को उँगलियों में रगड़ रगड़ के लण्ड अन्दर बाहर शण्ट कर रहा था। हर चोट पर मिसिज अग्रवाल का धड़ आगे हो जाता था और रूपेश का लण्ड उनके तालू तक घुस जाता था। जितनी चूत पर चोट पड़ती थी उतनी ही तेजी से वह रूपेश के लण्ड को मुँह में ले रहीं थीं। रूपेश अपने दोनों हाथों से उनके दोनों गोल गोल चूतड़ मजबूती से जकड़े था और अपना लण्ड ऐसे पेल रहा था जैसे चूत में धकापेल कर रहा हो। उसकी जकड़ से मिसिज अग्रवाल के पीछे का क्रेक फैल गया था। आगे पीछे स्पीड से सटासट हो रहा था। मिसिज अग्रवाल पूरी तरह आनन्द में थीं।

“ओ मेरी माँ दो दो लण्ड मेरे अन्दर हो रहे हैं। इतना मजा ता मैने नहीक्त लिया”

राकेश और रूपेश के ऊपर वासना का भूत सवार था। राकेश पूरा लण्ड खच्च से घुसेड़ता आवाज निकालता “ले पूरा ले ले”

रूपेश आगे बढ के मुँह में घुसेड़ देता “ले मेरा ले अब” ।

मिसिज अग्रवाल अलग से चिल्ला रहीं थीं “ हॉ हॉ लगाओ छोड़ना नहीं आज इसको फाड़ के रख दो पूरा” ।

राकेश ने स्पीड बढा दी। यकायक चिल्लाया “ मैं झड़ा। लो लो लो और लो”

मिसिज अग्रवाल “ नो नो अभी मत झड़ना। इस को फाड़ के रख दा। मेरे को बीच में मत छोड़ो” ।

लेकिन राकेश ने सफेदी उगलना चालू कर दी थी। मिसिज अग्रवाल ने जल्दी से अपनी चूत बाहर खींच ली।

राकेश को खिसका कर व तेजी से उस ओर आया। कमर में हाथ डाल के उसने मिसिज अग्रवाल को चित्त कर दिया और अपना लण्ड धपाक से पेल दिया। राकेश ने जबर्दस्त चुदाई की थी। वह बुरी तरह लथपथ था। बाथरूम में घुस गया।

मिसिज अग्रवाल ने रूपेश को खींच कर कसके भींच लिया। दोनों बाहें उसकी पीठ पर बाँध लीं और टाँगें उसकी कमर के इर्द गिर्द जकड़ लीं।

बोलीं “ ओ मेरे लाला अब मेरी इसकी पूरी मरम्मत कर दो” ।

रूपेश ने बाहर कर अचानक धक्के से अन्दर करते हुये कहा “लो भौजी तुम भी क्या याद रखोगी किस लौड़े से पाला पड़ा था” ।

बिसात बिछी हुई थी। खेल चालू था। दोनों एक दूसरे से चिपके हुये चुदाई किये जा रहे थे और

बतिया रहे थे।

मिसिज अग्रवाल “हाँ लौड़ा तो तुम्हारा जबर्दस्त है। अन्दर तक धुनाई कर देता है। आज तो मजा आ गया पहले वनिला अब चाकलेट आइसक्रीम”।

रूपेश “और अग्रवाल साहब क्या हैं”।

मिसिज अग्रवाल “इटालियन बार क़ंची और मजेदार”।

रूपेश “और कितने स्वाद चखे हैं”।

मिसिज अग्रवाल “बहुत पहले चखा था देसी बरफ। पत्थर की तरह। बड़ी तकलीफ हुई थी”।

रूपेश “कम आन भौजी इतनी चटोरी चीज और स्वाद न ले”।

मिसिज अग्रवाल के चेहरे पर झैंप फैल गयी “जाओ भी तुम बहुत तेज हो। चख लेतीं हूँ दूसरा स्वाद कभी कभी। लेकिन दो स्वाद कभी नहीं चखे। पर खाती मजे से हूँ और खूब खाती हूँ”।

रूपेश “हाँ मैं तो चीज देख के ही जान गया हूँ बेमिसाल। मैने तो ऐसी कभी नहीं चखी”।

मिसिज अग्रवाल “ऐसी कितनी चखीं हैं”।

रूपेश “चख लेता हूँ कभी कभी”।

मिसिज अग्रवाल “बहुत शॉतर हो” उसको कस के चूम लेती हैं फिर कहतीं हैं “लेकिन ये चाकलेट क्यों पिघल रही है”।

रूपेश “ना भौजी इसमें बड़ा दमखम है।” उसने उकड़ूँ बैठ के दूर तक लण्ड बाहर कर के घप से घुसेड़ दिया। हर बार पर उसका पेडू धप्प से खुली चूत पर पड़ने लगा। उसने दोनों हथेलियों में दोनों उभारों को भर लिया और बुरी तरह गूँधने लगा। मिसिज अग्रवाल की उत्तेजना आने में देर नहीं लगी। उन्होंने मोनिंग शुरू कर दी। रूपेश का लण्ड और तेजी से चूत में होने लगा। मिसिज अग्रवाल हिस्टेरिक हो चुकी थीं। उन्होंने जोरों से ब के सीने में सिर छुपा लिया। अपने दाँत ब के उभरे निपिल पर गढा दिये।

वह जोर जोर से आवाज निकाल रही थीं “हाँ हाँ लगाओ और मारो फाड़ डालो मेरी बुर को देखें कितना जोर है लौड़े में”।

रूपेश भी जवाब दे रहा था “ले और ले आज तक तुमने इटालियन आइस ही खायी है आज जम्बो चाकलेट का मजा चख”।

दोनों का बहसीपन बढ़ता ही गया। रूपेश लगाता गया मिसिज अग्रवाल लेती गयी। रूपेश ने अँगूठा ले जाके जैसे ही क्लीटोरि पर रखा मिसिज अग्रवाल एक्सप्लोड हो गयीं।

वह चिल्लायीं “ये लल्लाााा ये क्याााा कियाााा ऊऊऊऊऊऊऊ मैएँ तो हे राम मै क्या करूँ”। उनकी चूत हवा में उठ गयी। रूपेश ने उनकी कमर पकड़ के बड़ी तेजी से लण्ड चूत में आगे पीछे किया।

फिर वह भी चिल्लाया “लो भौजी मै। भी खल्लाााासस हुअअअअआाााा”।

मिसिज अग्रवाल ने हाथ से पकड़ के उसका लण्ड बाहर खींच दिया। वह उनकी चूत के ऊपर बड़ी देर तक रस उगलता रहा।

राकेश बाथरूम के दरवाजे से यह नजारा देख रहा था उत्तेजित भी थोड़ा हो रहा था।

मिसिज अग्रवाल निढाल पड़ी थीं। बोली “तुम लोग तो गजब के चोदू हो। लगता है सुनीता और रश्मि भी बड़ी चुदेल हैं।”

अपनी चूत पर हाथ रखते हुये वह बोलीं “ओ माँ ये तो भुस बन गई है हाथ लगाने से दुखती है। मैं तो अब पूरी तरह सन्तुष्ट हो गयी हूँ। कुछ दिन इसको छेड़ूंगी भी नहीं। तुम लोग फ्रैस होलो। चलो मैं तुम लोगों के लिये गरमागरम काफी बनाती हूँ। फिर तुम्हारी कहानी सुनेंगे”।

नेपाल की राधिका

रूपेश ने गरम गरम चाय सिप करते हुये कहा “मैं सुनाता हूँ अपनी कहानी। ये मेरी परस्त्रीगमन की पहली यादगार है। मैं रजनी की एक दोस्त को चोदना चाहता था लेकिन उसने मना कर दिया था। उसके बाद रजनी ने मुझे सेक्स में इस तरह सुख दिया कि उसकी चूत का ही दीवना हो गया। मेरी रजनी से शादी हुये एक साल हुआ था। मेरे ऑफिस की एक शाखा नेपाल में थी। ऑफिस की तरफ से मुझे तीन महिने के लिये मुझे नेपाल जाना पड़ा। कुछ दिनों बाद रजनी भी वहाँ आ गयी थी फिर एक महिने साथ रह कर लौट आयी थी क्योंकि चुदवाने के सिवाय उसे करने को कुछ नहीं था।

लोगों को नेपाल के बारे में बहुत गलत धारणायें हैं। गोरखों और शेरपाओं को देख कर सोचते हैं कि सभी लोग इस तरह के हैं जबकि ज्यादातर लोग भिन्न हैं। नाक नक्श में भारत जैसे व्यक्तित्व में आकर्षक। गरीबी है लेकिन लोगों में दयनीयता नहीं। बड़े महनती और साफ सुथरे लोग हैं। कोई मोटा नहीं दिखता है खासतौर पर औरतें एकदम स्लिम हैं। पहली बार देखा कि सादा बदन में कितना आकर्षण हो सकता है। कसरत से सन्तुलित शरीर भला लगता है पर प्राकृतिक मेहनत से ढाले हुये शरीर में जो लोच और कशिश होती है उसको देख कर ही जाना जा सकता है। जितने शहर से दूर होते जाइये उतनी ही कमनीय काया की औरतें देखने को मिलेंगी। डियोडॉरेंट न लगाने से लोगों से गंध आती है लेकिन औरतों से आती गंध बुरी नहीं लगती बल्कि मादकता बढ़ाती है। कार से पोखरा जाते हुये मैं कई गाँव से गुजरा। एक गाँव में एक मामूली से घर की औरत को देखा। उसकी लम्बी नपी तुली देह ऐसी कि आँख न हटे। एक बस स्टैंड पर एक औरत भट्टे बेच रही थी। रंग तौंवियाँ उम्र भी 35 40 के आसपास लेकिन छहहरे वदन की गजब की रौनक। हाथ उठा के भुट्टे देती तो मुँहवाली चूचियाँ एकदम तन के उठ जातीं। हर जगह बाँकी औरतें और कुछ तो इतनी मदमाती कि देखते ही रह जाओ।

राकेश और रूपेश को चिपकाते हुये मिसिज अग्रावाल बोलीं :

मैं अपनी कहानी सुनाती हूँ। यह मेरी पहली खराबी की कहानी तो नहीं है लेकिन मेरी प्यार की पहली चुदाई की कहानी है जिससे शरीर और मन को बड़ी सन्तुष्टि मिली थी। बात उन दिनों की है जब हम लोगों को पैसे की काफी तंगी थी। इन्होंने अपना नया काम शुरू किया था। अमित बेटा करीब 6 साल का था। हम लोग दिल्ली में तीसरे मंजिल की एक बरसाती में रहते थे। कुल एक कमरा था और बस खुली हुयी छत जिस पर किचिन और बाथ। सास ससुर साथ में रहते थे। चुदाई का मौका ही नहीं मिल पाता था। कभी कभार ही चुदाई हो पाती थी वह भी जल्दी जल्दी। शरीर में सेक्स की भूख सी भरी रहती थी जिसको अग्रावाल साहब और उभार देते थे। वह सेक्स में माहिर थे और चुदाई एन्च्वाय करने की उन्होंने आदत डाल दी थी।

मकान मालिक एक बूढ़े दम्पति थे जो नीचे की मंजिल पर रहते थे। दूसरी मंजिल काफी हवादार थी। तीन कमरे थे छत थी। इस मंजिल एक कम्पनी का बड़ा आफिसर रहता था। जवान मियाँ बीवी थे। बीवी दूसरे शहर में काम करती थी। छुट्टी में वह आ जाती थी या फिर मियाँ वहाँ चला जाता था। वह भी अग्रावाल ही थे नाम थे शेखर और माया। शेखर सुदर्शन था कद काठी से अच्छा देखनें खूबसूरत ऊँचा। माया भी ठीक थी लेकिन ऐसी कोई खास बात नहीं। दोनों ही खुशमिजाज थे। मकान मालिक और शेखर माया से हम लोगों की अच्छी मेल मुलाकात होती रहती थी। साथ साथ ताश खेलते थे। एक दूसरे से खुल कर मजाक करते रहते थे।

शेखर मुझे संगीता भाभी और मेरे पति को भाई साहब कह कर बुलाता था। मेरे सास ससुर का आदर करता था उन्हें आये दिन घुमाने ले जाता था क्योंकि मेरे पति काम नया होने से काफी व्यस्त रहते थे। अमित के लिये भी चाकलेट और गिफ्ट लाता था। अमित उससे काफी घुलमिल गया था। मेरे सास ससुर उसको बड़ा पसंद करते थे। जब भी घर में कोई खास चीज बनती उसको भिजवाते थे। मैं देने जाती थी तो वह काफी हिचक दिखाता था। मैं खाना अच्छा बनाती थी और उसको मेरा खाना बेहद पसंद था।

लेकिन एक बात मैं देखती थी। जब मैं छत पर कपड़े डालने या किसी और काम के लिये होती थी शेखर मुझे घूरता रहता था। उसके कमरे की खिड़की से छत एकदम सामने पड़ती थी। उसकी आँखों में वासना साफ नजर आती थी। वह भी भूखा ही रहता था।

मैं जानबूझ कर लापरवाह रहने लगी जैसे मुझे मालूम ही न हो। अपना पल्लू गिरा देती और रस्सी पर कपड़े डालने के लिये पंजों के बल खाड़ी हो दोनों हाथ ऊपर तान देती जिससे मेरी चूचियाँ उसके सामने एकदम खड़ी हो जातीं। कभी मैं अकेले पेटीकोट में आ जाती और उसकी तरफ चूतड़ कर के पैर फैलाके झुक जाती जिससे मेरी दोनों गोलाइयाँ और बीच की दरार उसके सामने आ जाये। इस तरह से खिजाने में तो मुझे हमेशा से मजा आता है। जितानी ही उसकी वासना भड़काती उतना ही ज्यादा मजा आता था। मेरी तबियत खुश रहती थी। जब कभी इनसे चुदाई कराती थी तो उसमें भी ज्यादा मजा आता था। कई बार तबियत होती कि नंगी ही छत पर आ जाऊँ या कम से कम ब्रा और पैण्टी में चली जाऊँ लेकिन इतनी हिम्मत नहीं पड़ती थी।

जब भी मिलते थे अब ज्यादा मजाक करने लगे थे। मजाक में सैक्स का पुट भी आने लगा था। अग्रवाल साहब को भी यह सब कुछ बुरा नहीं लगता था वह शेखर को पसंद करते थे। मैं भी ज्यादा खुल गयी थी। जब तब सैक्स का तीर छोड़ देती थी।

जैसे एक शाम मकान मालिक के यहाँ सब लोग ताश खेल रहे थे। पड़ोस के और भी मियाँ बीवी भी आ जाते थे।

बाजी हारने पर मेरे मुँह से निकल गया “मै लूज हो गयी”।

शेखर शरारत से बोला “अरे भाई साहब ने इतनी जल्दी लूज कर दिया”।

मै भी कहॉ चूकने वाली थी “तुम्हारे बस का तो है नहीं किसी को लूज करना”।

और सब हँस दिये जिन में मेरे पति भी सामिल थे।

खेल में मैं और शेखर पार्टनर रहते थे। खूब घुलमिल गये थे खुल कर हँसी मजाक करते थे। लेकिन मैं शरारत से बाज नहीं आती थी।

जितना मैं शेखर को निसहाय पाती उतना ही मैं बोल्ट होती जा रही थी। खेल में उसके सामने बैदती। जब मौका पाती सबकी निगाह बचाके अनजानी बन कर पल भर के लिये अपनी टॉगें इस तरह खोल देती कि उसे मेरी कच्छी तक दिख जाये। कभी तो मैं कच्छी भी न डालती और फट्ट से चौड़ा देती कि उसे अन्दर का नजारा दिख जाये लेकिन सेन्टर पीस न दिखे। उसके चेहरे पर तनाव उभर आता आँखें जलने लगती और वह ताव खाकर रह जाता। अजीब बात थी पति बगल में बैठा होता था और मैं चूत किसी और को दिखाती थी लेकिन देर सबेर जब पति से चुदवाने को मिलता था तो ज्यादा आनन्द आता था।

इन दिनों शेखर के लिये मुझे तरह तरह का खाना बनाना बहुत अच्छा लगता था। कभी कभी जो कम चीज हो तो खुद न खाती थी उसको दे देती। मैं खाना ले कर कम जाती थी क्योंकि जब मैं उसके सामने अकेली होती थी तो इतनी उत्तेजित हो उठती थी कि मेरी चूत गीली हो जाती थी। ज्यादातर मैं अमित से खाना भिजवा देती थी। चूत की जब प्यास मिटी होती थी तब ही जाती थी और जल्दी से वापिस आ जाती थी। उसका ख्याल रखने में मुझे कुछ कुछ सैक्स का सुख मिलता था।

ताश के समय बड़ा ही हल्का फुल्का माहौल रहता था। किसका बर्थ डे है किसकी ऐनीवर्सरी है सब बातें होती रहती थीं। साथ में वधाइयाँ भी और पार्टी का इसरार भी। ऐसे ही एक बार मेरी बर्थ डे पर सब ने खूब वधाइयाँ दीं। शेखर ने जिद की मैं तो पार्टी लेकर ही रहूँगा।

शेखर की बात रखने के लिये दूसरे दिन मैने खीर पकवान बनाये। सबसे पहले उसके लिये ही लेकर गयी।

शेखर के सामने खाना रखते हुये मै बोली “लो बर्थ डे की पार्टी”।

वह बोला “भाभी तुम्हारे जैसा नहीं देखा। फाइव स्टार रेस्टोरैण्ट में पार्टी होना चाहिये”।

जैसे उसने मेरी दुखती नस पर हाथ रख दिया हो आँखों में आँसू आ गये

“लाला तुम जानते हो कि तुम्हारी भाभी गरीब है इसलिये मजाक उडाते हो” ।

शेखर ने अपने दोनों कान पकड़ लिये “भाभी ये क्या कहती हो । इतनी खूबसूरती की मालिक इतने गुणों वाली कैसे गरीब हो सकती है । तुम्हारे देवर में जब सामर्थ है तो तुम कैसे गरीब हो । मुझे अपना देवर मानती हो तो आगे से अपने को गरीब मत समझना” ।

आगे बढ कर भवना में मैने उसे अपने से चिपका लिया । वह कुर्सी पर बैठा था । उसका सिर मेरी दोनों टॉगों के बीच फँस गया ठीक मेरी बुर के ऊपर ।

मुझे ध्यान आया तो मैं वहाँ से भाग आयी ।

इसके बाद हम लोगों का रबैया बदल गया । शेखर अमित के लिये ढेर सारी चीजें लाता । अमित उ सके बहुत नजदीक हो गया । उसके घर में ही एक कमरे में पढने का ठिकाना बना लिया । एक चाभी उसने हमें दे दी थी । मेरे लिये भी शेखर तरह तरह की गिफ्टें लाता । मैं भी उसका ख्याल रखने लगी थी । घर साफ कर देती चीजें जमा देती बिस्तर बदल देती जिसकी तरफ से वह लापरवाह था और माया ही आने पर कुछ कुछ कर पाती थी । अब मुझ में सकुचाहट आ गयी थी और उसमें खुलापन ।

एक बार उसने एक पैकिट मुझे दिया “भाभी तुम्हारे लिये” ।

अपने बाथरूम में जाकर खोला क्योंकि वही एक अकेली जगह होती थी । बड़ी मँहगी और खूबसूरत ब्रेजियर और पैण्टी के 6 6 आइटम थे । मन तो बहुत खुश हुआ लेकिन नीचे आकर मैने शेखर से कहा

“भाभी को ऐसी गिफ्ट दी जाती है कहीं” ।

वह बोला “भाभी आपके पास अच्छी ब्रा और पैण्टी नहीं हैं इसलिये सोचा दे दूँ” ।

बाकई मेरे पास बहुत ही सस्ती ब्रेजियर थीं । इसका मतलब है उसने सूखने डाले अन्दर के कपड़े अच्छी तरह देख लिये थे । तब तो उसने यह भी देख लिया होगा कि मेरी पैण्टियों का चूत के सामने वाला भाग कैसा काला हो गया है । सोच कर बड़ी शरम सी आयी ।

उसने पूँछा “आपको अच्छा नहीं लगा” ।

मेरे मुँह से निकल गया “ बहुत अच्छी प्रेजेण्ट है” ।

वह शरारत से बोला “ क्या पता अगर पहिन कर दिखवाओ तब पता लगे” ।

मैने आँखें ततेर कर कहा “क्याया” ।

वह पीछे हट गया “सॉरी भाभी” ।

लेकिन मेरे वदन में सिहरन दौड़ गयी चूत में फुरफुरी हो आयी फिर भी बोल गयी :

“ मैं अग्रावाल साहब के अलावा किसी को नहीं दिखाने वाली” ।

एक दिन सोचा कि उसके गददे को झाड़ दूँ । गददे को उठाया तो कई मैगजीन रखी थीं । कबर पर

ही औरत की नंगी फोटो। एक को उठा के देखा तो आँखें खुली की खुली रह गयीं। दूसरे पेज पर ही एक पूरी नंगी औरत दोनों उँगलियों से चूत खोले हुये लेटी थी और सामने एक नंगा आदमी खड़ा था जिसका बड़ा सा लण्ड तन कर खड़ा था। आगे वाले पेज में तो इससे भी बढ कर था। औरत आदमी का आधा लण्ड लील चुकी थी। पूरी मैगजीन में एक से बढ कर एक सीन थे। ओ माँ साथ में जो कहानियाँ थीं चुदाई का पूरा सचित्र वर्णन। सोचा मैगजीन को वहीं रख दूँ। लेकिन छोड़ी ही नहीं गयी। मैं वहीं शेखर के बैड पर लेट गयी। पढते पढते न जाने कब अपनी चूत सहलाने लगी। मैगजीन पूरी भी न कर पायी। जब एक कहानी का नायक बुरी तरह से नायिका को पेल रहा था और वह चिल्ला रही थी मैं अपनी चूत को बुरी तरह से रगड़ रही थी। शरीर ऐंठ गया था। चूचियाँ तन गयी थीं। मैं अपनी बुर में लण्ड चाहती थी। उसी वख्त लेने को छटपटा रही थी। उस रात मेरी चुदाई न होती तो मैं शायद अपने को न रोक पाती रात में ही शेखर के पास आ जाती। जब अग्रावाल साहब ने अपना लण्ड घुसेड़ा मैंने उन्हें कस के भीच लिया और खलास हो गयी ऐसा बहुत कम होता था मुझे झड़ने में बड़ा समय लगता था। कई बार तो बगैर झड़े रह जाती थी। उनको भी बड़ा ताज्जुब हुआ।

यह शेखर के बारे में नई बात जानी थी। मुझे भी उन नंगी फोटो और चुदाई की कहानियाँ पढने की लत लग गयी। बहुत सोचती नहीं पढ़ूँगी लेकिन जब भी बैड ठीक करने जाती उसी के बिस्तर पर ले कर बैठ जाती। उसके बाद चूत में जो आग लगती उसे बुझाने के लिये अग्रावाल साहब का लौड़ा लेने के लिये जतन करने पड़ते। तबियत होती शेखर के पास का कर प्यास बुझा आऊँ। जब कभी नई मैगजीन न पा पाती बड़ी बेचैन रहती।

सोचा शेखर के अण्डरवियर बनियान भी क्यों न धो कर डाल दूँ पूरे हफ्ते के जमा हो जाते हैं। जब अण्डरवियर साफ कर रही थी तो देखा कइयों पर झड़ा हुआ वीर्य सूख गया है। उस पर साबुन लगाते समय कँपकँपी आ गयी। शाम को जब उसने देखा कि मैंने अण्डरवियर बनियान धोये हैं तो उसे बहुत खेद हुआ। बड़ा जोर लगाया कि मैं ऐसा हर्गिज न करू लेकिन मैं भी जिद पर अड़ गयी कि इसमें कोई बुराई नहीं। जब भी मैं अण्डरवियर साफ करती किसी न किसी पर झड़ने के दाग होते। विचारा बाकई औरत के लिये भूखा था। मैं उससे बाहर बाहर के मजाक के लिये तो तैयार थी लेकिन चुदवाना केवल अग्रावाल साहब से थी। मैं उसके लिये कुछ नहीं कर सकती थी।

सम्बन्ध दोनों परिवारों में गहर हो गये थे। माया और मेरे परिवार के सब लोग एक दूसरे को पसंद करते थे। लेकिन मैं शेखर की तरफ रोमॉन्टिक तौर पर महसूस करती थी और शायद वह भी।

एक बार उसके दफ्तर में पार्टी थी। उसने अग्रावाल साहब के सामने ही मूझसे पूछा कि मैं उसके साथ पार्टी में चल सकती हूँ। अग्रावाल साहब ने ही कहा इसमें पूछने की क्या बात है।

शेखर के साथ पहली बार अकेली जा रही थी पार्टी के लिये के लिये मैं अच्छी तरह से सँभरी। नीचे आयी टकटकी बाँध कर देखता ही रह गया। उसने मेरा हाथ थाम लिया। दबाते हुये धीरे से बोला “भाभी तुम बाकई बहुत खुबसूरत हो”। सुन कर बड़ा प्यारा लगा। मैं उससे और सट गयी।

आलीशान पार्टी थी एकदम भव्य। मेरा हाथ पकड़ कर खीचता प्रोसीडेंट वाइसप्रोसीडेंट के पास ले गया। बड़े अधिकार से बोला “ये संगीता है”। मैं मुँह देखती रह गयी। कहाँ तो भाभी भाभी कहते जबान नहीं थकती थी अब सीधा संगीता पर उतर आया लेकिन भाया बहुत। अपने साथियों से बड़ी बतक्लुफी से उसी तरह मिलवाया “संगीता से मिलो”। जल्दी ही समझ में आ गया कि पार्टी में पति पत्नियों को बुलाया गया था और शेखर मुझे अपनी पत्नी की तरह मिलवा रहा है हालाँकि मुँह से नहीं कह रहा है।

अकेला होने पर मैंने उससे कहा “मुझसे क्यों झूठ कर रहे हो”।

वह बोला “मैं सब को दिखाना चाहता हूँ कि मेरी बीवी भी किसी से कम खूबसूरत नहीं है”।

“लेकिन मैं तो शायद उसमें भी तुमसे बड़ी हूँ एक बच्चे की माँ हूँ”।

शेखर “तुम्हें देख कर कौन कह सकता है। देखो वह लेडीज तुमसे ज्यादा बड़ी दिख रही हैं। तुम बिल्कुल कमसिन हो”।

मेरे वदन में रोमांच हो आया। तबियत हुयी उसको जकड़ के चूम लूँ। बस हाथ पकड़ कर उससे सट गयी।

शेखर की पोजीशन अच्छी थी। उसके जूनियर की बीवियाँ मेरे आगे पीछे घूम रहीं थीं। मैं बड़ा गौरव महसूस कर रही थी।

पार्टी तो मेरी जान है। मुझे माहौल मिल गया। मैं बहुत ईजी महसूस कर रही थी। डॉन्स चालू हुआ तो उसमें खूब भाग लिया। लोग तारीफ कर रहे थे। पार्टनर के संग डॉन्स में शेखर से एकदम चिपक गयी दूसरी बीवियों से भी ज्यादा। मेरी छातियाँ उसके सीने में घुसी जा रहीं थीं। मैंने अपनी दोनों रानें उसकी जाघ से चिपका दीं। टॉगों के बीच के गड्ढे को उसके टॉगों के ऊपर के उभार से सटा दिया और

डॉन्स की थिरकन के साथ रगड़ लगाने लगी। शेखर के लण्ड मियाँ रंग लाने लगे थे और मेरी बुर के दरवाजे पर दस्तक देने लगे थे। लेकिन समय की नजाकत को देखते हुये सब कर के मैंने अपने बीच थोड़ा फासला कर लिया। पार्टी खतम होने तक मेरी हिचकिचाहट जाती रही थी। घर लाने की जगह वह कहीं और ले जा कर पति का अपना असली हक बसूल करना चाहता तो मैं तैयार थी। लेकिन उसने जरूरत से ज्यादा शराफत दिखायी और मैं रात भर तडपती रही। पर पार्टी से मैं खुश थी मेरा सजना सभरना सार्थक हो गया था।

दूसरे दिन मैंने निश्चित कर लिया कि शेखर से लगवाउंगी आखिर वह अपना है। दूसरे दिन खाना लेकर गयी।

मेरा स्वागत करता हुआ वह बोला “आइये भाभी”।

मैंने व्यंग से कहा “अब भाभी कहते हो कल तो संगीता संगीता रटे जा रहे थे”।

शेखर “वह तो डामा था”।

मैंने चिड़ कर कहा “हाँ तुम बड़े डामाबाज हो ढोंगी पति बनते पर रोल भी पूरा नहीं करते”।

“हाँ तुम्हारे जैसी एक्टिंग जो नहीं कर सकता” ।

मैं बार बार उसे हिन्ट दे रही थी और वह आगे ही नहीं बढ़ रहा था ।

कभी पूरे जोवन सामने कर देती “आज मैंने तुम्हारी चीज पहनी है” ।

कभी “ओहो आज तो बेहद गरमी है मैंने तो नीचे भी कुछ नहीं डाला है” ।

यहाँ तक की अपनी पहनी हुई पैण्टी भी इसके बिस्तर पर छोड़ आयी जिस पर रिसती चूत का पानी लगा था ।

लेकिन शेखर ने तो जैसे कसम ले ली थी । जितना वह अन्जान बन रहा था उतना ही मैं बेकाबू होती जा रही थी ।

मैंने सीधा बार करने का सोच लिया ।

एक शाम जब वह आफिस से आया तो मैं उसी के बिस्तर पर अधलेटी हो कर नंगी मैजजीन पढ़ रही थी । केवल ब्लाउज पहिन रखा था जिसके नीचे ब्रेजियर नहीं थी और पेटिकोट डाल था जिसके नीचे पैण्टी नहीं थी । टॉगें मोड़ रखी थीं जिससे अन्दर का काफी कुछ दिखता था । दरवाजा खोल कर शेखर अन्दर आया । कुछ देर तक मैं बैसी ही लेटी रही । फिर उठ कर खड़ी हो गयी ।

गुस्से से एक फोटो दिखाते हुये बोली “छिः कैसी गंदी किताबें पढते हो” ।

थोड़ी देर के लिये वह सहम गया धीरे से बोला “भाभी मेरी अपनी भी तो जरूरत है” ।

मैंने पोज बनाते हुये कहा “तुम्हारी भाभी क्या इनसे कम है” ।

उसकी बोली में तलखी आ गयी “भाभी तुम हमेशा खिजाती हो । पहले फ्लर्ट करती हो फिर पीछे हट जाती हो । पार्टी में भी तुमने यही किया । तुम्हारी बजह से ही मैं भड़का रहता हूँ । ऊपर से कहती हो कि भाई साहब के अलावा आप किसी को भी नहीं दिखा सकतीं” ।

मैंने शोख हो कर कहा “जब तुम कह सकते हो कि जब तक देवर है मैं किसी चीज की कमी महसूस न करूँ तो मैं क्यों नहीं कह सकती भाभी भी तुम्हारी हर जरूरत के लिये है” ।

शेखर का चेहरा चमक उठा “तो भाभी फोटो में जो है दिखाओ” ।

“मेरी बला से” और मैं बाथरूम की तरफ भागी ।

वह बोला “अब मैं नहीं छोड़ूँगा”

और दौड़ कर बाथरूम में पहुँचने के पहिले ही उसने मुझे दबोच लिया ।

शेखर ने मुझे पीछे से पकड़ लिया था । उसने दोनों हथेलियों में मेरे दोनों उभार कस के दबा लिये थे और कसके चिपक गया था । मैं उसका लण्ड चूतडों के कैंक पर महसूस कर रही थी । मैंने मुँह पीछे कर के उसको चूम लिया । उसने घुमा काके मुझ को सामने कर लिया । अपने होंठ मेरे होंठों पर जेर से गढा कर चूसने लगा और इतने जोर से जकड़ा कि मेरी पसलियाँ चरमरा उठीं । फिर एक हाथ सामने ला कर मेरा ब्लाउज खोलने लगा । मैंने कहा “इसको मत उतारो” लेकिन उसने बटन खोल कर उसे अलग कर दिया । अब उसने हाथ पेटिकोट के नाड़े पर बढाया । मैंने मिनत की

“प्लीज इसको रहने दो”। वह बोला “तुमने मुझे इतना सताया कि अब कोई दया नहीं” और नाड़ा खींच कर उसने मेरा पेटिकोट नीचे गिरा दिया। अब मैं बिल्कुल नंगी थी। शर्म से एक हाथ से अपने दोनों सीनों को ढँक लिया और एक हाथ जहाँ टॉगें मिलती हैं उसके ऊपर रख लिया। उसने सख्ती से मेरे दोनों हाथ अलग कर दिये। मैंने अपनी आँखें बन्द कर लीं। जब कुछ देर तक कुछ न हुआ तो मैंने अपनी आँखें खोलीं। वह एकटक मेरे को निहारे जा रहा था। मैंने कहा “क्या बात है पहले माया को नहीं देखा क्या”।

लेकिन शेखर तो भरपूर गोलाइयों में डूबा था। दोनों उभार छोटे सख्त खरबूज से जो आगे से मोड़ लेकर ऊपर हो गये थे जिन के ऊपर निपिल्स गहरे बादामी शहतूत से उठे हुये थे। नीचे तराशी जाँघें केले के तने सी उसके बीच में चूत का जबर्दस्त उभार डबलरोटी सा। बाल अच्छी तरह तराशे गये थे एकदम शेव नहीं किये गये थे। बीच से झाँकती दो रसभरी नारंगी की फाँकें। उसके सामने पूरी औरत खड़ी थी। बाहर से छहहरी अन्दर से भरपूर। दमकते शरीर पर परफैक्ट गोला इयाँ अर्धगोल उठे हुये भरे भरे मॉसल नितम्ब जो कुशन की तरह आदमी का बोझ सँभाल सकते थे और सपाट तने पेट के नीचे जाँघों के बीच फूली फूली खुलने को आतुर जगह।

शेखर सम्मोहित सा मुँह बाये देख रहा था।

संगीता ने आगे बढ़ कर उसके कंधे पर हाथ रख कर झझोड़ा तो उसे सुध हुयी।

मुँह से निकल गया “वण्डरफुल भाभी तुम बाहर से जितनी खूबसूरत हो अन्दर से उस से भी ज्यादा खूबसूरत हो”।

फिर चुम्बक सा चिपक गया और उनकी चिकनी मॉसल कमर में हाथ डाल कर ले जाकर उनको ले जाकर बैड पर बिठा दिया। वह अब भी पूरे कपड़े सूट टाई पहिने हुये था। चूमने को झुका तो संगीता ने टाई से पकड़ कर खींचते हुये कहा “मेरे को तो निर्लज्ज कर दिया और खुद बाबूजी बने हुये हैं”। संगीता तो उतारने की जरूरत ही नहीं पड़ी शेखर ने खुद सब कपड़े निकाल कर एक तरफ फर्स पर फेंक दिये। अब वह संगीता के सामने एकदम नंगा था। संगीता ने उसकी ओर देखा। अच्छी सुदर्शन देह थी। अग्रावाल साहब की तो थोड़ी सी तोंद थी लेकिन शेखर का पेट सपाट था। अग्रावाल का लण्ड अच्छा खासा था लेकिन शेखर का भी उनसे कम नहीं था मोटाई में ज्यादा ही होगा। झाँट के बाल जरूर बेतरतीब हो रहे थे जैसे वहाँ ध्यान न दिया गया हो। शेखर ने बढ़ करके उसे बाँहों में ले लिया और धकेलता हुआ उसको बैड पर अपने नीचे गिरा लिया। पहले मुँह पर सब जगह चूमा फिर संगीता के रसीले होंठ अपने होंठों में दबोच लिये। संगीता ने अपनी बाँहों में उसका सिर जकड़ लिया और टॉगें थोड़ी चौड़ी कर दीं जिससे शेखर के नीचे के भाग को जगह मिल जाये। शेखर का लण्ड उसको गड़ रहा था।

शेखर नीचे को खिसक गया। संगीता की चोटी सी उभरीं चूचियाँ शेखर को बहुत अच्छी लग रहीं थीं। वह उनको पूरी मुट्टी में सहलाने लगा फिर उनको भींचने लगा। संगीता के शरीर में बिजली सी दौड़ गयी जो उसकी चूत तक चली गयी। वह सिसकने लगी। उसके निपिल्स एकदम सख्त हो गये थे। जब शेखर न घुण्डियों को उँगलियों में मसला तो संगीता शीत्कार कर उठी “उइइइइइइइइइइइइ”। उसकी चूत से पानी निकालने लग गया था। शेखर ने मुँह नीचा का के एक निपिल को मुँह में

है”।

संगीता का चेहरा लाल हो गया। शेखर फिर बोला “लेकिन यह तो अच्छी हैल्थ की निशानी है”। वह फिर शेखर से चिपक गयी। शेखर ने उसे बाँहों में बाँध लिया। उसके होंठ संगीता के होंठों पर चिपक गये। शेखर का लण्ड उसकी चूत में ही था। वह उसे बहुत धीरे धीरे अन्दर बाहर कर रहा था। वह बैसी ही पड़ी रही। थोड़ी देर में उसके पोंद हिलने लगे। शेखर थोड़ी जल्दी जल्दी लण्ड आगे पीछे करने लगा साथ ही उसके होंठों को जोर से चूसने लगा। संगीता को मजा आने लगा था और उसकी चूत ने भी साथ देना चालू कर दिया। जब शेखर अन्दर करता तो वह अपनी चूत लण्ड पर दबा देती और जब बाहर करता तो उसको आगे बढा देती। शेखर बकायदा रिदिम से चोदने लगा। संगीता भी अब गर्मा चुकी थी। वह उसी रिदिम से जवाब दे रही थी।

अब शेखर ने संगीता को बाँहों में लिये हुये ही पलटा खाय। संगीता चित नीचे आ गयी और वह उसके ऊपर था। लण्ड अभी भी अन्दर था। शेखर खिसक कर उकड़ू बैठ गया। हथेलियों में उफनते हुये जोबनों को भर कर दबाते हुये लण्ड को गहराइयों तक पेलने लगा। संगीता शी शी कर उठी। उसने दोनों हाथों से शेखर की कमर को जकड़ लिया। वह बेकाबू थी। चूत पानी पानी हो रही थी।

जब लण्ड चूत की दीवारों को चीरता गहराई में घुसता तो वह भी चूत को अपनी तरफ से धकेलती।

संगीता जोरों से साँसें निकाले जा रही थी “ऊ हू ऊू हू हू हू हु हू उ ओ000 ऊऊऊऊऊऊऊऊ हू उ हू हु हु उू हू हू ऊ डू ऊ ऊ ऊ ऊ ऊ ी री री इइ ई ई ई ई ई।

साथ ही बदबुदा रही थी “लगा तो पूरे जोर से “

“कचूम्र निकाल दो इसका”

“शेखर देखें तुम्हारा जोर आज छोड़ना नहीं इसे”।

शेखर और जोर से शंटिंग करता था।

“लो भाभी ये लो तुम भी याद रखोगी”

“लो भाभी ये लो पूरा अन्दर तक”

और एक कस के धक्का और लण्ड की मूठ चूत पर बैठ गयी।

संगीता बोल उठी “भाभी नहीं तुम्हारी संगीता उसी दिन जैसी”।

शेखर “भाई साहब का वह हक में नहीं लूंगा। तुम तो मेरी प्यारी सी भाभी डार्लिंग हो इतनी खूबसूरत। लेकिन भाभी तुमने चूत के दर्शन का तो मौका ही नहीं दिया”।

उसने लण्ड बाहर खींच लिया। संगीता ने टोंगें जितनी खोल सकती थी खोल दी थीं। लण्ड ने चूत का छेद फैला दिया था। चूत का भाग फूला हुआ बड़ा मस्त लग रहा था। चूत के होंठ रसीली फाँकों से मुँह फैलाये थे। चूत की बटरप्लाई ने उत्तेजना में पंख फैला दिये थे। गहराई तक छेद

फिर शिथिल हो कर हवा में उठा भाग नीचे गया।

धीमें से उसने कहा “ ये क्या किया शेखर तुमने”।

शेखर के चेहरे पर संगीता का चूतरस लिपट गया था। चूत दो बार झड़ने के बाद भी मुँह बाये खिली हुई थी। गुलाबी नरमी अन्दर से झाँक रही थी। छेद से पानी रिस रहा था। संगमरमरी मस्त गोलाइयों गर्ब से उठी हुयीं थीं। शेखर का लण्ड बहुत ही गरमाया हुआ था। उसने सुपाड़े का मुँह छेद पर लगाया और पूरा का पूरा पेल दिया। साथ ही संगीता के होंठों पर उसी की चूत के रस से सने होंठ जमा दिये। लेकिन संगीता ने अपना मुँह घुमा लिया। फिसल कर शेखर के होंठ उसके गाल पर आ गये जहाँ उन को रगड़ कर वह रस उसके गाल पर मलता हुआ बोला “भाभी अब चेहरे पर और रौनक आ जायेगी”।

उसका लौड़ा चूत को बेंग करने के लिये बेताब था। उसने तेजी से चुदाई चालू कर दी लेकिन संगीता की चूत ने उसी गरमी से जवाब नहीं दिया। शेखर ने सिर खिसका कर संगीता की दायीं चूची पर रख लिया। संगीता ने दायें हाथ से सिर को जोरों से दबा लिया। शेखर ने होंठ खोल कर उसके भरी और तनी घुण्डियों को मुँह में ले लिया।

संगीता अचानक उछल गयी “उई री”

शेखर अब दायीं चूची को छूसने लगा था और बायीं चूची के निपिल को मसल रहा था।

संगीता के शरीर में गर्मी भर गयी थी उसकी चूत फड़कने लगी थी।

उसने टॉगें शेखर के कूल्हे पर बाँध ली थी। चूत को सिकोड़ कर उसके लौड़े को ग्रीप में ले लिया था।

शेखर का लण्ड संगीता की टनल में दीवारों को रगड़ता हुआ पूरा अन्दर तक जाता और बाहर आता था। संगीता आनन्द में भर पूर थी। जिसका इजहार वह आवाजें निकाल के कर रही थी। वह अपने नाखून शेखर की पीठ पर गढाने लगी थी।

शेखर अपने घुटनों के बल उठ गया था और दोनों से कस के चूचियाँ पकड़ रखी थीं जिससे पूरे जोर से पेल सके।

लण्ड की चोट चूत पर पड़ती तो संगीता और जोश देती “हाँ शेखर लगाओ न पूरे दम से”।

शेखर “ले मेरा पूरा बुर को चीर के रख देगा”।

संगीता “हाँ हाँ लगाओ देखें कितना दम है”।

शेखर “अच्छा तो अब लो”। चोट से संगीता के चूतड़ पीछे हट गये। बैड चरमरा उठा।

संगीता “हाँ शेखर रख दो भाड़ के इसको। बनादो भुर्ता इसका”।

“उसको आज मजा चखाता ही हूँ” कह कर शेखर उतर कर बैड के बगल में खड़ा हो गया। दोनों जाँघें खींच कर उसकी चूत को एकदम किनारे पर कर लिया। और संगीता की टॉगें चौड़ा कर खड़े खड़े ही छेद पर लण्ड लगा के पूरा पेल दिया।

थी” ।

मैं चुदी थी चुदी थी और खूब चुदी थी ।

न चुदायी कराके भागने की जल्दी थी और न आवाज करने चिल्लाने पर बंदिश जो मुझे वर्षों से नसीब नहीं हुआ था ।

जब मैं ऊपर जा रही थी तो एकदम हलकी थी जैसे हवा में उड़ रही हूँ ।

उस दिन के बाद शेखर से हमारे सम्बन्ध और गाढे हो गये । मैं उसकी भाभी और वह मेरा देवर था सिवाय उस समय के जब वह मुझे पकड़ के अपनी कसर निकालता था । उस समय वह मुझे संगीता कहता था । कमसे कम महिने में एक दिन तो ऐसा आता ही था । मैं कोई पछतावे की बात नहीं थी । वह सच्चे देवर की तरह बर्ताव और कर्तव्य करता था । उसे चाहती थी ।